# शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नात्तकोत्तर महाविद्याल
# राजनांदगांव (छ.ग.)

## वार्षिक प्रतिवेदन

## प्राणीशास्त्र विभाग
(2022 – 2023)

**प्राणीशास्त्र विभाग**
**वार्षिक प्रतिवेदन 2022 – 23**

**1. विभाग का परिचय:**

- **स्थापना वर्ष:**
  - स्नातक 1957,
  - स्नातकोत्तर 1982

- **स्वीकृत पद की संख्या:** 07 –
  - प्राध्यापक – 01
  - सहायक प्राध्यापक – 06
- **विद्यार्थियों की संख्या:**

| कक्षा / विषय | आबंटित छात्र | प्राप्त आवेदन | प्रवेशित छात्र |
|---|---|---|---|
| बीएससी 1 प्राणीशास्त्र | 440 | 2193 | 380 |
| बीएससी 2 प्राणीशास्त्र | 440 | 374 | 374 |
| बीएससी 3 प्राणीशास्त्र | 440 | 334 | 334 |
| **बीएससी 1 IFF** | 40 | 105 | 40 |
| **बीएससी 2 IFF** | 40 | – | 40 |
| **बीएससी 3 IFF** | 40 | – | 40 |
| एमएससी पूर्व प्राणीशास्त्र | 30 | 824 | 30 |
| एमएससी अंतिम प्राणीशास्त्र | 20 | 20 | 20 |

- **गत वर्ष का परीक्षाफल:**

| कक्षा | प्रवेशित | परीक्षा में सम्मिलित | उत्तीर्ण | अनुत्तीर्ण |
|---|---|---|---|---|
| बीएससी 1 प्राणीशास्त्र | 345 | 345 | 328 | 17 |
| बीएससी 2 प्राणीशास्त्र | 293 | 293 | 278 | 05 |
| बीएससी 3 प्राणीशास्त्र | 319 | 319 | 314 | 05 |
| **बीएससी 1 IFF** | 37 | 37 | 33 | 04 |
| **बीएससी 2 IFF** | 28 | 28 | 27 | 01 |
| **बीएससी 3 IFF** | 44 | 44 | 42 | 0 |
| एमएससी पूर्व प्राणीशास्त्र | **30** | **30** | **30** | **निरंक** |
| एमएससी अंतिम प्राणीशास्त्र | **17** | **17** | **17** | **निरंक** |

## 2. स्नातक एवं स्नातकोत्तर परिषद् तथा उसकी बिन्दुवार गतिविधियों का विवरण पाठ्यक्रम गतिविधियाँ

### i. स्नातकोत्तर परिषद्: प्राणीशास्त्र परिषद् का गठन:

- स्नातकोत्तर की पूर्व कक्षाओं के गुणानुक्रम के अनुसार प्राणीशास्त्र परिषद का गठन दिनांक 01.01.2022. को किया गया। प्राचार्य डॉ के एल टांडेकर द्वारा नव – मनोनित पदाधिकारियों को शपथ दिलाया एवं अनुशाशित रहते हुए सर्वोत्तम प्रदर्शन करने हेतु प्रेरित किया। छात्र परिषद का मुख्य कार्य विभागीय गतिविधि में सहयोग देना और विषय से संबधित विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन करना।
- मनोनित पदाधिकारी:

 अध्यक्ष – मानसी निर्मलकर

- उपाध्यक्ष – गेसू देवांगन
- सचिव – भारती उर्वशा
- सह सचिव – सतीश चंद्रवंशी

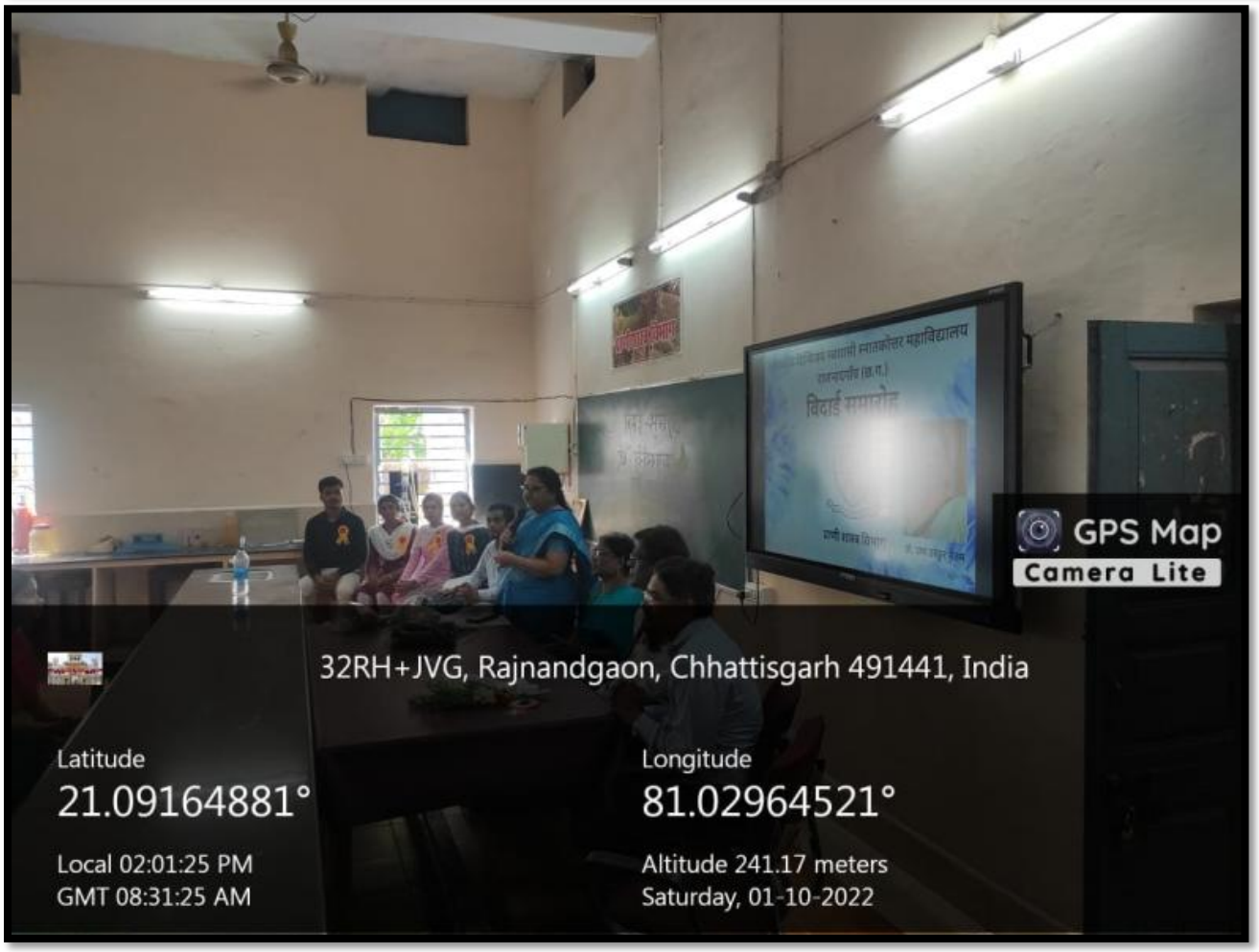


**स्नातकोत्तर परिषद्: प्राणीशास्त्र परिषद् का गठन**

**ii. पाठ्यक्रम योजना एवं कार्यान्वयन :-**

- अधययन मंडल की बैठक दिनांक 31.07.22 को सम्पन्न हुई ।
- पाठयक्रम पुनरावलोकन पाठ्यक्रम समिति की बैठक में निम्लिखित सदस्य सम्मलित हुए ।

  डॉ. सीमा गुप्ता : लाइफ साइंस विभाग पं, रवि,वि,वि, रायपुर

  डॉ. निसरीन हुसैन : शासकीय महिला महाविधायलय दुर्ग

  प्रो . महेंद्र मेश्राम : शासकीय महिला महाविधायलय राजनंदगांव

  श्री. आकाश देवांगन : भूतपूर्व छात्रा

  एवं समस्त विभागीय प्राध्यापक

  - बैठक में बी .एस. सी. प्राणीशास्त्र का पाठ्यक्रम हेमचंद यादव दुर्ग वि .वि. के अनुसार यथावत रखा गया ।
  - बैठक में बी .एस.सी. ओधोगिकी मत्स्य एवं मा fत्स्यकी का पाठ्यक्रम गतवर्षानुसार यथावत रखा गया ।
  - स्नातकोत्तर प्राणीशास्त्र के पाठ्यकम गत वर्षानुसार यथावत रखा गया ।
- मासिक शैक्षणिक योजना :- प्राणीशास्त्र विभाग के प्राध्यापकों के द्वारा स्वयं की दैनंदिनी में वार्षिक एवं मासिक शैक्षणिक योजना तैयार की जाती है ।

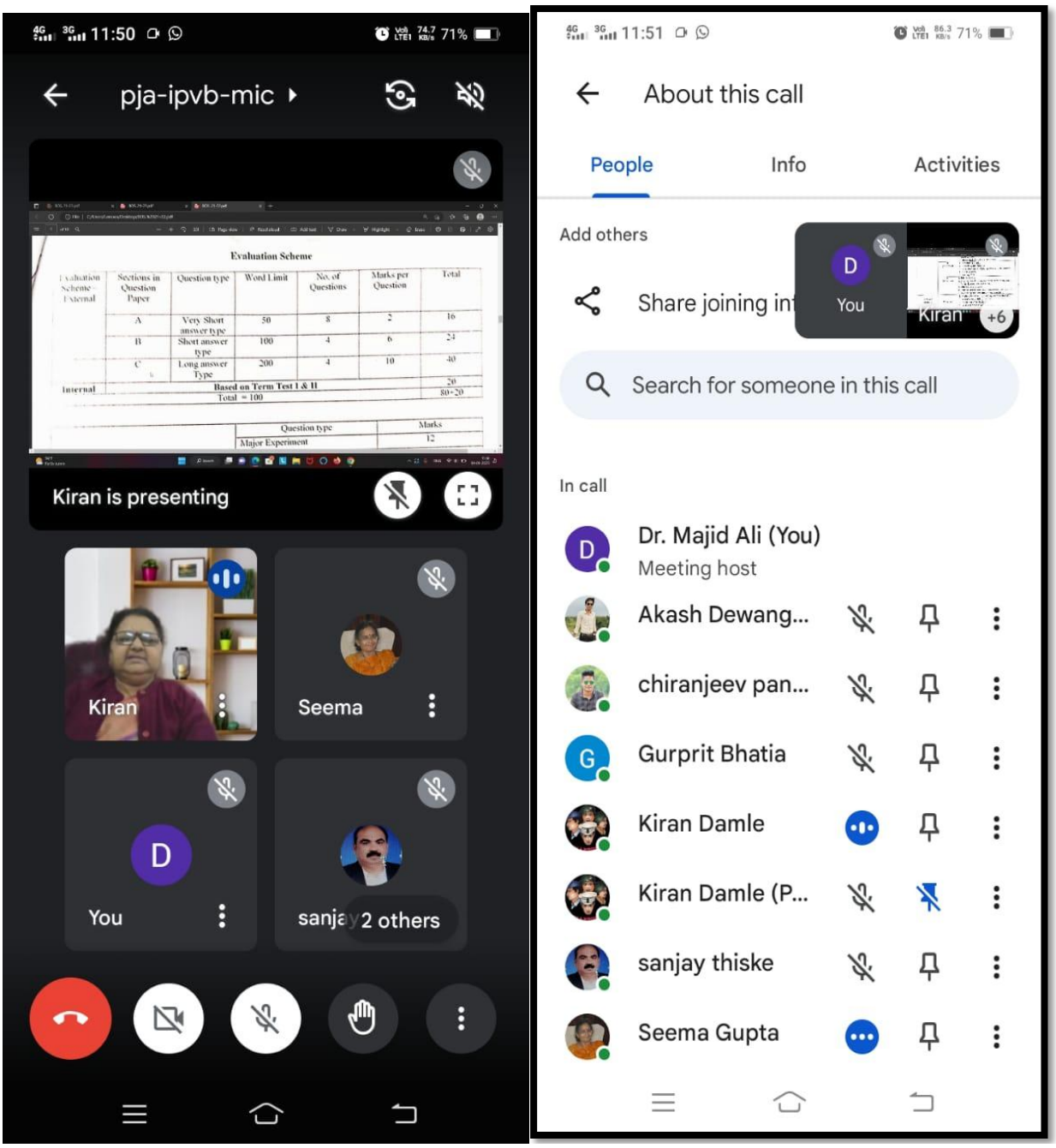


**अधययन मंडल की बैठक**

- **पाठयक्रम समृद्धिकरण :-**
  स्नातकोत्तर के छात्र छात्राओं को नेट सेट तथा पी .एस.सी. की कोचिंग व विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा के लिए स्नातकोत्तर के छात्र छात्राओं को नेट स्लेट की कोचिंग तथा पी.एस.सी. व विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा के लिए आँनलाइन कोचिंग कक्षाये आयोजित की गयी ।
- **फीडबैक छात्र छात्राएं :-** विभाग द्वारा स्नातक व स्नातकोत्तर के छात्र छात्राओं का फीडबैक लिया जाता है ।

- **शिक्षण शिक्षण पद्धति :-** एल .सी.डी., ओव्हरहेड प्रोजेक्टर , कम्प्युटर एवं इन्टरनेट के माध्यम से ऑनलाइन कक्षाए संचालित की गयी है ।
- प्राणीशास्त्र विभाग के प्राध्यापकों ने कोविड -19 की समस्या में शासन के दिशा निर्देशों के अनुसार अपने समस्त शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक कार्य ऑनलाइन के माध्यम में जारी रखे ।

**4. कमजोर छात्रों एवं मेधावी छात्रों के लिए गए प्रयास एवं उसमें विभाग के प्राध्यापकों की पृथक - पृथक संलग्नता एवं उसके परिणाम:**

➢ **कमजोर छात्र :**

- बीएससी भाग प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय के प्राणीशास्त्र एवं औधोगिक मत्स्य एवं मत्स्यकी के कमजोर छात्र छात्राओं के लिए प्राध्यापकों द्वारा अतिरिक्त कक्षाएँ ली जाती है.
- अतिरिक्त टेस्ट ले कर कमजोर अध्याय में सुधार किया जाता है।

➢ **मेधावी छात्र :**

- बीएससी भाग प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय के प्राणीशास्त्र एवं औधोगिक मत्स्य एवं मत्स्यकी के मेधावी छात्र छात्राओं के लिए प्राध्यापकों द्वारा अतिरिक्त कक्षाएँ ली जाती है.
- अतिरिक्त टेस्ट ले कर कमजोर अध्याय में सुधार किया जाता है।
- अतिरिक्त कक्षा लेकर प्रोत्साहन दे कर आगामी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयारी कराई जाती है।

**5. रेमेडीअल कक्षाओं की जानकारी एवं एवं उसके आयोजन का प्रभाव**

- बीएससी भाग प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय के प्राणीशास्त्र एवं औधोगिक मत्स्य एवं मत्स्यकी के छात्र छात्राओं के लिए प्राध्यापकों द्वारा रेमेडीअल कक्षाए ली जाती है .
- रेमेडीअल कक्षाओं के आयोजन से छात्र छात्राओं की शंका का समाधान किया जाता है.
- विषय सम्बन्धी समस्याओं का समाधान किया जाता है .
- कक्षा में सवाल नहीं पूछ पाने पर विद्यार्थी यहाँ खुल कर अपनी बात रख सकते है .
- परीक्षा परिणाम प्रतिशत में बढ़ोत्तरी हुई है।
- छात्रों के उत्तीर्ण प्रतिशत में वृद्धि हुई है।

**6. स्नातक स्तर पर विशेषकर स्नातक प्रथम वर्ष के परीक्षा परिणाम में सुधार हेतु किए गए प्रयास की जानकारी:**

- रेमेडीअल कक्षाओं का आयोजन
- कमजोर छात्रों के लिए प्राध्यापकों द्वारा अतिरिक्त कक्षाए ली जाती है .
- विषय सम्बन्धी समस्याओं का समाधान किया जाता है .

- मेधावी छात्रों के लिए प्राध्यापकों द्वारा अतिरिक्त कक्षाए ली जाती है .
- अतिरिक्त कक्षा लेकर प्रोत्साहन दे कर आगामी प्रतयोगी परीक्षाओं के लिए तैयारी कराई जाती है।

**7. नेट/सेट की कोचिंग तथा स्नातकोत्तर कक्षा के कितने प्रतिशत छात्रों ने परीक्षा में भाग लिया:**

- स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों के लिए नेट /सेट की तैयारी हेतु कोचिंग कक्षाओं का आयोजन किया जाता है।
- नेट/सेट उत्तीर्ण भूतपूर्व विद्यार्थियों के द्वारा प्रोत्साहन व मार्गदर्शन भी दिया जाता है।
- छात्रों के लिए प्राध्यापकों द्वारा अतिरिक्त कक्षाए ली जाती है .
- अतिरिक्त कक्षा लेकर प्रोत्साहन दे कर आगामी प्रतयोगी परीक्षाओं के लिए तैयारी कराई जाती है।

**उत्तीर्ण का प्रतिशत:**

- नेट/सेट की कोचिंग, प्राध्यापकों द्वारा कोचिंग कक्षा एवं नेट /सलेट उत्तीर्ण भूतपूर्व विद्यार्थियों के द्वारा प्रोत्साहन व मार्गदर्शन के फलस्वरूप इस सत्र में विभाग के 03 विद्यार्थी नेट व सेट परीक्षा में सफलता प्राप्त किया।

**8. विभाग स्तर पर विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी , जानकारी प्रदाय करने के लिए किए गए प्रयास:**

- छात्रों के लिए प्राध्यापकों द्वारा अतिरिक्त कक्षाए ली जाती है .
- स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों के लिए नेट /सेट की तैयारी हेतु विषय विशेषज्ञों द्वारा विशेष कोचिंग कक्षाओं का आयोजन किया जाता है।
- नेट/सेट उत्तीर्ण भूतपूर्व विद्यार्थियों के द्वारा प्रोत्साहन व मार्गदर्शन भी दिया जाता है।
- अतिरिक्त कक्षा लेकर प्रोत्साहन दे कर आगामी प्रतयोगी परीक्षाओं के लिए तैयारी कराई जाती है।

**9. विभाग के कितने छात्रों को इस वर्ष रोजगार प्राप्त हुआ, उसकी सूचि:**

| क्रं | रोजगार प्राप्त छात्रों की संख्या | रोजगार क्षेत्र |
|---|---|---|
| 1 | 2 | Private ABIS |

**10. बिभाग का शैक्षणिक रिकार्ड:**

**A. शोध संगोष्टी का आयोजन: दिनांक एवं विषय.**

| क्र. | दिनांक | गतिविधि | विषय | आयोजन कर्ता |
|---|---|---|---|---|

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 03-05 जून 2022 | राष्ट्रीय वेबीनार | Conservation Of Natural Resources and Sustainable Environment | शास. दिग्विजय महा . राजनांदगांव – प्राणीशास्त्र , IQAC एवं विज्ञान क्लब. |

## ऑनलाईन शोध संगोष्ठी का आयोजन

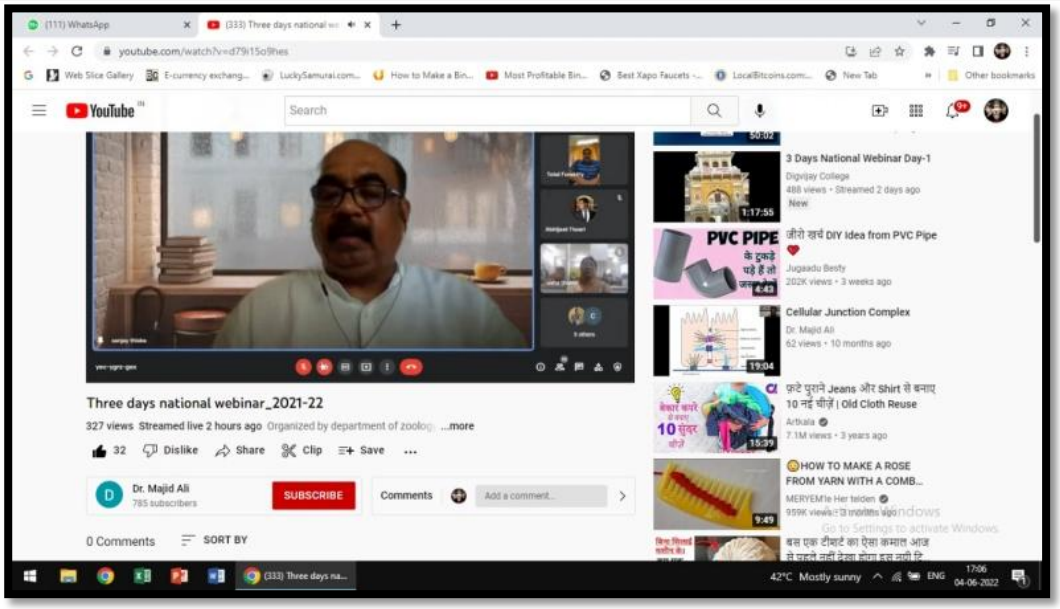

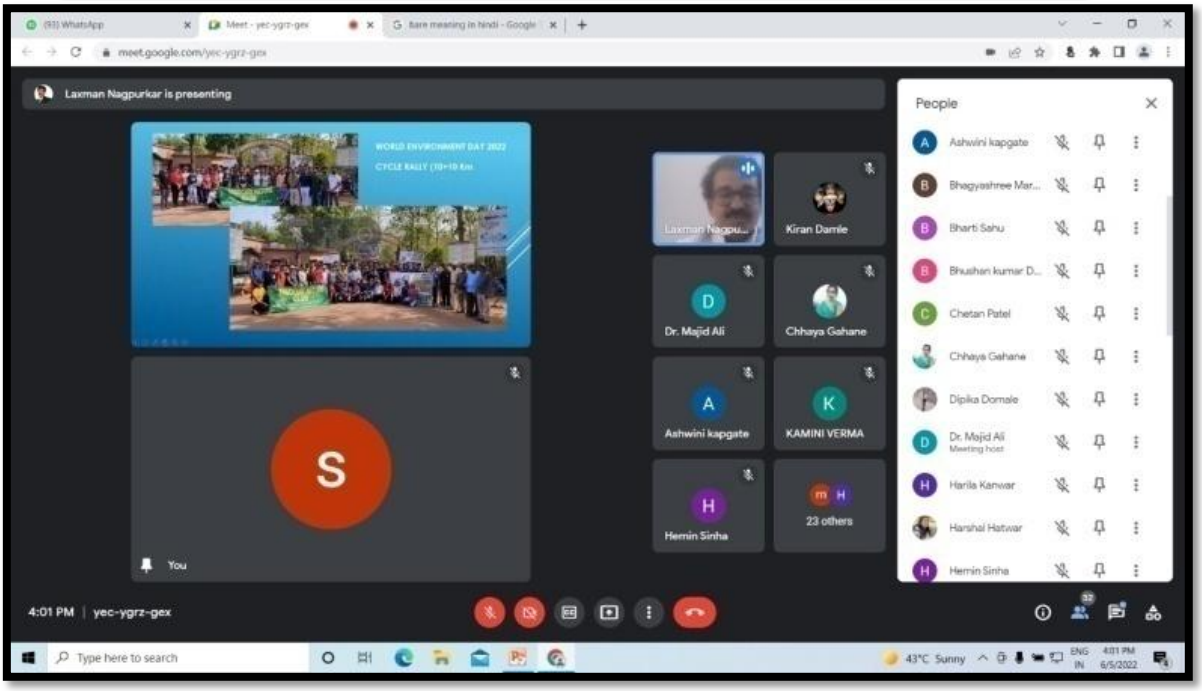

meet.google.com/yec-ygrz-gex
College Rajnandgaon (C.G)
"Only One Earth"
World Environment day
2022
Dr. Majid Ali
18 others
4:23 PM | yec-ygrz-gex


meet.google.com/yec-ygrz-gex
Laxman Nagpurkar is presenting
WORLD ENVIRONMENT DAY 2022
Kiran Damle
Dr. Majid Ali
Chhaya Gahane
Ashwini kapgate
KAMINI VERMA
Hemin Sinha
23 others
You
People
Ashwini kapgate
Bharti Sahu
Chetan Patel
Chhaya Gahane
Dipika Domale
Dr. Majid Ali
Meeting host
Harila Kanwar
Harshal Hatwar
Hemin Sinha
4:01 PM | yec-ygrz-gex

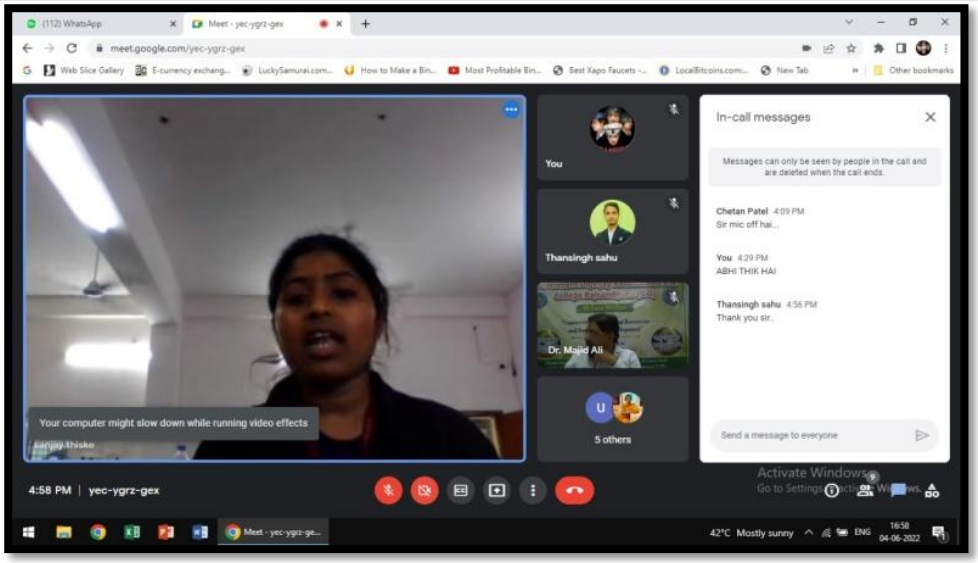


राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन | प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और सतत विकास की थीम पर किया गया आयोजन

# ग्लोबल वार्मिंग, जैव विविधता सहित विभिन्न मुद्दों पर हुई चर्चा

*विश्व पर्यावरण दिवस को मनाने का उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना है। पर्यावरण संकट की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने और इस संकट के बारे में लोगों को याद दिलाने के लिए पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।*

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

राजनांदगांव. शासकीय दिग्विजय स्वशासी उच्चतर महाविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग, आईक्यूएसी, विज्ञान कलब एवं पेंचवेली पीजी महाविद्यालय, परासिया, जिला छिंदवाड़ा के कोलाबोरेशन में प्राचार्य डॉ. केएल ढांडेकर की प्रेरणा व संरक्षण में तीन दिवसीय राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर किया गया। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और सतत विकास थीम पर यह वेबिनार आयोजित की गई। मुख्य अतिथि हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग की कुलपति डॉ. अरूणा पलटा द्वारा इस ज्वलंत विषय पर इस राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी के माध्यम से जागरूकता के लिए दिग्विजय कॉलेज की पूरी टीम को शुभकामनाएं दी। उषा ठाकुर विभागाध्यक्ष प्राणीशास्त्र द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। प्राचार्य डॉ. केएल ढांडेकर ने शुभकामनाएं दी।

मुख्य भाषण में डॉ. पंजाब राव चंदेलकर, प्राचार्य शासकीय पेंचवेली पीजी महाविद्यालय परासिया, जिला छिंदवाड़ा ने जैव विविधता के बारे में बताया और जैव विविधता में विलुप्त होने वाले प्राणियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। आलोक तिवारी (आईपीएस) डीएसएफ नवा रायपुर ने जल के स्रोत, उपयोग, वनों की कटाई और इसके संरक्षण सहित जल संरक्षण विषय पर चर्चा की। डॉ. एलपी नागपुरकर ने टिकाऊ भविष्य के लिए अनुकूलन और प्रवासन पहल के माध्यम से जलवायु परिवर्तन और चिंता पर बहुमूल्य बातचीत की। उन्होंने भविष्य में स्थिरता को बदलने के लिए 17 लक्ष्यों और सात संचालन सिद्धांतों के बारे में चर्चा की।

## 600 से अधिक प्रतिनिधि पंजीकृत

इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी को सफल बनाने में महाविद्यालय की तकनीकी टीम के आशीष मांडले व नादिर इकबाल ने तकनीकी समर्थन दिया। गोकुल निषाद, रसायन विज्ञान संकाय, चिरंजीव पांडे, प्राणी विज्ञान संकाय और प्राणीशास्त्र के एमएससी के छात्र, एनसीसी कैडेट ने इस वेबिनार को सफल बनाने के लिए अपनी सक्रिय भागीदारी एवं सहयोग दिया। भारत के विभिन्न राज्यों से लगभग 600 से अधिक के प्रतिनिधि, जिसमें जम्मू, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, यूपी, मिजोरम और मेघालय, और छत्तीसगढ़ के आंतरिक क्षेत्र से वेबिनार में पंजीकृत हुए। औसत 75 प्रतिनिधि यूट्यूब चैनल से लाइव जुड़े। टीम के शिक्षकों, छात्रों, आयोजकों ने इसे संभव बनाने के लिए, उनके प्रयास और कड़ी मेहनत कर इस वेबिनार को सार्थक बनाया।

## पशु-मानव अनुपात पर चर्चा

डॉ. संजय ठिसके ने पर्यावरण संरक्षण के बारे में अपने विचार साझा किए। वह पर्यावरण को प्रभावित करने वाली विभिन्न समस्याओं सहित ग्लोबल वार्मिंग, जैव विविधता असंतुलन, पशु मानव अनुपात, वनों की कटाई, शहरीकरण के विभिन्न पहलुओं के बारे में बात की।

शास. दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगाँव (छ.ग.)

# दिग्विजय कालेज द्वारा तीन दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार

राजनांदगांव (दावा)। शास. दिग्विजय स्वशासी उच्चतर महाविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग, आईक्यूएसी, विज्ञान क्लब एवं पेंचवेली पीजी महाविद्यालय, परासिया, जिला छिंदवाड़ा के कोलाबरेशन में, प्राचार्य डॉ. के.एल. टांडेकर, की प्रेरणा व संरक्षण में तीन दिवसीय राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर किया गया, जिसका शीर्षक ''प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और सतत विकास'' था।

विश्व पर्यावरण दिवस जैसे दिन को मनाने का उद्देश्य लोगों का ध्यान उस दिन के प्रभावों की ओर आकर्षित करना होता है। पर्यावरण संकट की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने और इस संकट के बारे में लोगों को याद दिलाने के लिए पर्यावरण दिवस मनाया जाता है, और इसी तरह इस वेबिनार का उद्देश्य और लक्ष्य को पूरा करने के लिए भारत के विभिन्न राज्यों से विद्वान जन चिंतन और विचार विमर्श करने के लिए जुड़ें। उद्घाटन भाषण के मुख्य अतिथि हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग की कुलपति डॉ. अरुणा पलटा द्वारा इस ज्वलंत विषय पर इस राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी के माध्यम से जागरूकता के लिए दिग्विजय कॉलेज की पूरी टीम को शुभकामनाएं दीं। इसके बाद श्रीमती उषा ठाकुर विभागाध्यक्ष प्राणिशास्त्र द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। तत्पश्चात माननीय प्राचार्य डॉ. के.एल. टांडेकर ने शुभकामनाएं दीं। मुख्य भाषण में डॉ. पंजाब राव चटेलकर, प्राचार्य शास. पेंचवेली पीजी महाविद्यालय

परासिया, जिला छिंदवाड़ा ने जैव विविधता के बारे में बताया, और जैव विविधता में विलुप्त होने वाले प्राणियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

आलोक तिवारी (आई.पी.एस.) डी.एस.एफ, अरण्य भवन, अटल नगर, नवा रायपुर नें जल के स्रोत, उपयोग, वनों की कटाई और इसके संरक्षण सहित जल संरक्षण विषय पर चर्चा की। डॉ. एल.पी. नागपुरकर ने टिकाऊ भविष्य के लिए अनुकूलन और प्रवासन पहल के माध्यम से जलवायु परिवर्तन और चिंता पर बहुमूल्य बातचीत की । उन्होंने टिकाऊ भविष्य के लिए जलवायु परिवर्तन पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने भविष्य में स्थिरता को बदलने के लिए 17 लक्ष्यों और सात संचालन सिद्धांतों के बारे में चर्चा की । निश्चित रूप से ग्लोबल वार्मिंग खाद्य स्थिरता और भोजन के उत्पादन को प्रभावित करती है, इस प्रकार जनसंख्या, समाज और मानव विविधता की स्थिरता को प्रभावित करती है, जिसके अभाव में वन्यजीव अपराध बढ़ रहा है। डॉ. संजय ठिसके ने 'पर्यावरण संरक्षण' के बारे में अपने विचार साझा किए। वह पर्यावरण को प्रभावित करने वाली विभिन्न समस्याओं सहित ग्लोबल वार्मिंग, जैव विविधता असंतुलन, पशु मानव अनुपात, वनों की कटाई, शहरीकरण के विभिन्न पहलुओं के बारे में बात की। डॉ. माजिद अली ने वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 पेश किया एवं इसकी जरुरत और कार्यान्वयन पर विस्तार पूरक चर्चा की। मंच संचालन मे डॉ. किरण लता दामले, डॉ. संजय ठीसके एवं डॉ माजिद अली का योगदान रहा। राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी को सफल बनाने में महाविद्यालय की तकनीकी टीम के आशीष मांडले व नादिर इकबाल ने तकनीकी समर्थन दिया।

गोकुल निषाद, रसायन विज्ञान संकाय, चिरंजीव पांडे, प्राणी विज्ञान संकाय, और प्राणीशास्त्र के एम.एस.सी. के छात्र, एन.सी.सी. कैडेट ने इस वेबिनार को सफल बनाने के लिए अपनी सक्रिय भागीदारी एवं सहयोग दिया। भारत के विभिन्न राज्यों से लगभग 600 से अधिक के प्रतिनिधी, जिसमे जम्मू, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, यूपी, मिजोरम और मेघालय, और छत्तीसगढ़ के आंतरिक क्षेत्र से वेबिनार में पंजीकृत हुए। औसत 75 प्रतिनिधी यूट्यूब चौनल से लाइव जुड़ें। टीम के सभी सदस्यों - शिक्षकों, छात्रों, आयोजकों ने इसे संभव बनाने के लिए उनके प्रयास और कड़ी मेहनत कर इस वेबिनार को सार्थक बनाया।

दावा- 13/06/2022 -सोमवार

# पर्यावरण को लेकर विशेषज्ञों ने जतायी चिंता

## दिग्विजय कॉलेज में हुआ राष्ट्रीय वेबीनार

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय स्वशासी उच्चतर महाविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग, आईक्यूएसी, विज्ञान क्लब एवं पेंचवेली पीजी महाविद्यालय, परासिया, जिला छिंदवाड़ा के कोलाबरेशन में प्राचार्य डॉ. केएल टांडेकर की प्रेरणा व संरक्षण में तीन दिवसीय राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर किया गया। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और सतत विकास थीम पर यह वेबिनार आयोजित किया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस को मनाने का उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना है। पर्यावरण संकट की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने और इस संकट के बारे में लोगों को याद दिलाने के लिए पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। भारत के विभिन्न राज्यों से पर्यावरण से ... वैज्ञानिकगण वेबिनार में शामिल हुए। ... अतिथि हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग की कुलपति डॉ. अरूणा पलटा द्वारा इस ज्वलंत विषय पर इस राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी के माध्यम से जागरूकता के लिए दिग्विजय कॉलेज की पूरी टीम को शुभकामनाएं दी। श्रीमती उषा ठाकुर विभागाध्यक्ष प्राणीशास्त्र द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। प्राचार्य डॉ. केएल टांडेकर ने शुभकामनाएं दी।

मुख्य भाषण में डॉ. पंजाब राव चंदेलकर, प्राचार्य शासकीय पेंचवेली पीजी महाविद्यालय परासिया, जिला छिंदवाड़ा ने जैव विविधता के बारे में बताया और जैव विविधता में विलुप्त होने वाले प्राणियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। आलोक तिवारी (आईपीएस) डीएसएफ नवा रायपुर ने जल के स्रोत, उपयोग, वनों की कटाई और इसके संरक्षण सहित जल संरक्षण विषय पर चर्चा की। डॉ. एलपी नागपुरकर ने टिकाऊ भविष्य के लिए अनुकूलन और प्रयासन पहल के माध्यम से जलवायु परिवर्तन और चिंता पर बहुमूल्य बातचीत की। उन्होंने टिकाऊ भविष्य के लिए जलवायु परिवर्तन पर अपना व्याख्यान ...। उन्होंने भविष्य में स्थिरता को बदलने के लिए 17 लक्ष्यों और सात संचालन सिद्धांतों के बारे में चर्चा की। निश्चित रूप से ग्लोबल वार्मिंग खाद्य स्थिरता और भोजन के उत्पादन को प्रभावित करती है, इस प्रकार जनसंख्या, समाज और मानव विविधता की स्थिरता को प्रभावित करती है, जिसके अभाव में वन्यजीव अपराध बढ़ रहा है।

डॉ. संजय ठीसके ने पर्यावरण संरक्षण के बारे में अपने विचार साझा किए। वह पर्यावरण को प्रभावित करने वाली विभिन्न समस्याओं सहित ग्लोबल वार्मिंग, जैव विविधता असंतुलन, पशु मानव अनुपात, वनों की कटाई, शहरीकरण के विभिन्न पहलुओं के बारे में बात की। डॉ. माजिद अली ने वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 पेश किया एवं इसकी जरूरत और कार्यान्वयन पर विस्तार पूर्वक चर्चा की। मंच संचालन में डॉ. किरण लता दामले, डॉ. संजय ठीसके एवं डॉ माजिद अली का योगदान रहा। इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी को सफल बनाने में महाविद्यालय की तकनीकी टीम के आशीष मांडले व सोहेल इकबाल ने तकनीकी समर्थन दिया।

गोकुल निषाद, रसायन विज्ञान संकाय, चिरंजीव पांडे, प्राणी विज्ञान संकाय और प्राणीशास्त्र के एमएससी के छात्र, एनसीसी कैडेट ने इस वेबिनार को सफल बनाने के लिए अपनी सक्रिय भागीदारी एवं सहयोग दिया। भारत के विभिन्न राज्यों से लगभग 600 से अधिक के प्रतिनिधि जिसमें जम्मू, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, यूपी, मिजोरम और मेघालय, और छत्तीसगढ़ के आंतरिक क्षेत्र से वेबिनार में पंजीकृत हुए। औसत 75 प्रतिनिधि यूट्यूब चैनल से लाइव जुड़े। टीम के शिक्षकों, छात्रों, आयोजकों ने इसे संभव बनाने के लिए, उनके प्रयास और कड़ी मेहनत कर इस वेबिनार को सार्थक बनाया।

10-06-22/ सवेरा संकेत

राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन | प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और सतत विकास की थीम पर किया गया

# ग्लोबल वार्मिंग, जैव विविधता सहित विभिन्न मु...

*विश्व पर्यावरण दिवस को मनाने का उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना है। पर्यावरण संकट की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने और इस संकट के बारे में लोगों को याद दिलाने के लिए पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।*

**पत्रिका न्यूज नेटवर्क**
patrika.com

**राजनांदगांव.** शासकीय दिग्विजय स्वशासी उच्चतर महाविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग, आईक्यूएसी, विज्ञान क्लब एवं पेंचवेली पीजी महाविद्यालय, परासिया, जिला छिंदवाड़ा के कोलाबरेशन में प्राचार्य डॉ. केएल टांडेकर की प्रेरणा व संरक्षण में तीन दिवसीय राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर किया गया। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और सतत विकास थीम पर यह वेबिनार आयोजित की गई। मुख्य अतिथि हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग की कुलपति डॉ. अरूणा पलटा द्वारा इस ज्वलंत विषय पर इस राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी के माध्यम से जागरूकता के लिए दिग्विजय कॉलेज की पूरी टीम को शुभकामनाएं दी। उषा ठाकुर विभागाध्यक्ष प्राणीशास्त्र द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। प्राचार्य डॉ. केएल टांडेकर ने शुभकामनाएं दी।

मुख्य भाषण में डॉ. पंजाब राव चंदेलकर, प्राचार्य शासकीय पेंचवेली पीजी महाविद्यालय परासिया, जिला छिंदवाड़ा ने जैव विविधता के बारे में बताया और जैव विविधता में विलुप्त होने वाले प्राणियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। आलोक तिवारी (आईपीएस) डीएसएफ नवा रायपुर ने जल के स्रोत, उपयोग, वनों की कटाई और इसके संरक्षण सहित जल संरक्षण विषय पर चर्चा की। डॉ. एलपी नागपुरकर ने टिकाऊ भविष्य के लिए अनुकूलन और प्रयासन पहल के माध्यम से जलवायु परिवर्तन और चिंता पर बहुमूल्य बातचीत की। उन्होंने भविष्य में स्थिरता को बदलने के लिए 17 लक्ष्यों और सात संचालन सिद्धांतों के बारे में चर्चा की।

10-06-22 पत्रिका

शोक सूचना

मणिलाल अग्रवाल

CS Scanned with CamScanner

B. विभाग में संचालित प्रोजेक्ट एवं उसकी एजेंसीः

| क्र. | प्राध्यापक का नाम | प्रोजेक्ट टॉपिक | एजेंसी |
|---|---|---|---|
| 1 | डॉ. संजय ठिसके | Assessment of some multidrug resistance bacteria from different environmental sources and experimental analysis during COVID - 19 ERA. | Autonomous Fund |

C. विभागीय शोध कार्य गतिविधियांः

| क्रं. | प्राध्यापक का नाम | स्तर | शास. सेवा में आने से | प्रकाशित पूर्ण शोध पत्रों की संख्या | पढ़े गए शोध पत्र, किंतु | सत्र 2022 - 23 |
|---|---|---|---|---|---|---|

- महाविद्यालय से प्रकाशित शोध पत्रिका research front में विभाग के 03 प्राध्यापकों के शोध पत्र प्रकाशित हुए।
- विभाग के 03 प्राध्यापकों ने 04 अंतर्राष्ट्रीय एवं 06 राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लेकर अपने शोध पत्रों को प्रस्तुत किया।
- विभाग के 02 प्राध्यापक ने 03 अंतर्राष्ट्रीय कॉनफेरेंस में Sectional President की भूमिका निभाई।

| | | | | शोध पत्र | पुस्तक/ अध्याय | | प्रकाशित | पढ़े गए |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | डॉ. किरण लता दामले | अंतर्राष्ट्रीय | 08 | 03 | 02 | 03 | 01 | 03 |
| | | राष्ट्रीय | 35 | 03 | – | 13 | 01 | – |
| | | राज्यस्तरीय | 02 | – | – | – | – | – |
| | | कार्यशाला | 12 | – | – | – | – | – |
| | | FDP | 23 | – | – | – | – | – |
| 2 | डॉ. संजय ठीसके | अंतर्राष्ट्रीय | 03 | 08 | 03 | – | 01 | – |
| | | राष्ट्रीय | 14 | 08 | 03 | – | 01 | – |
| | | राज्यस्तरीय | 02 | – | – | – | – | – |
| | | कार्यशाला | 23 | – | – | – | – | – |
| 3 | डॉ. माजीद अली | अंतर्राष्ट्रीय | 05 | 02 | – | 09 | 01 | – |
| | | राष्ट्रीय | 03 | 02 | – | 09 | – | – |
| 4 | श्री गुरप्रीत भाटिया | अंतर्राष्ट्रीय | 03 | – | – | – | – | – |
| | | राष्ट्रीय | 05 | – | – | – | – | – |
| | | राज्यस्तरीय | 01 | – | – | – | – | – |
| 5 | श्री. चिरंजीव पाण्डे | अंतर्राष्ट्रीय | 03 | 02 | | 01 | | 01 |
| | | राष्ट्रीय | – | – | – | 01 | – | – |
| 6 | श्रीमती करुणा रावटे | अंतर्राष्ट्रीय | 01 | – | – | 01 | – | – |
| 7 | श्री महेश लाडेकर | अंतर्राष्ट्रीय | – | – | – | 01 | – | – |

**द. विभाग के प्राध्यापकों द्वारा स्त्रोत व्यक्ति के रूप में डी गई सेवा:**

| प्राध्यापक का नाम | दिनाँक | संस्था का नाम | सेवा का स्वरूप एवं विषय | स्त्रोत व्यक्ति के रूप में प्राप्त मानदेय |
|---|---|---|---|---|
| डॉ. किरणलता दामले | 8-9 दिसंबर 2022 | शास. दिग्विजय महावि. राजनांदगाँव | अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेरेन्स – सेशन प्रेसीडेंट | नहीं |
| | 8-9 मई 2023 | 1 वदुज सतारा, महाराष्ट्र<br>2 डीम वि.वि. देहरादून | अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रन्स– सेशन प्रेसीडेंट | नहीं |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| डॉ. संजय ठिस्के | 8-9 दिसंबर 2022 | शास. दिग्विजय महावि. राजनांदगाँव | अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रन्स-सेशन प्रेसीडेंट | नहीं |

**12. राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन में विभाग का योगदानः**

- विभाग में स्नातकोत्तर के विधयार्थी प्रत्येक शनिवार प्राध्यापकों के साथ प्राध्यापक कक्ष, स्नातकोत्तर कक्षाओं, प्रयोगशाला, प्राणीशास्त्र संग्रहालय, आदि की साफ सफाई करते है।

GPS Map
Camera Lite
32RH+JVG, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India
Latitude
21.09168112°
Longitude
81.02969361°
Local 12:47:57 PM
GMT 07:17:57 AM
Altitude 248.98 meters
Tuesday, 27-09-2022

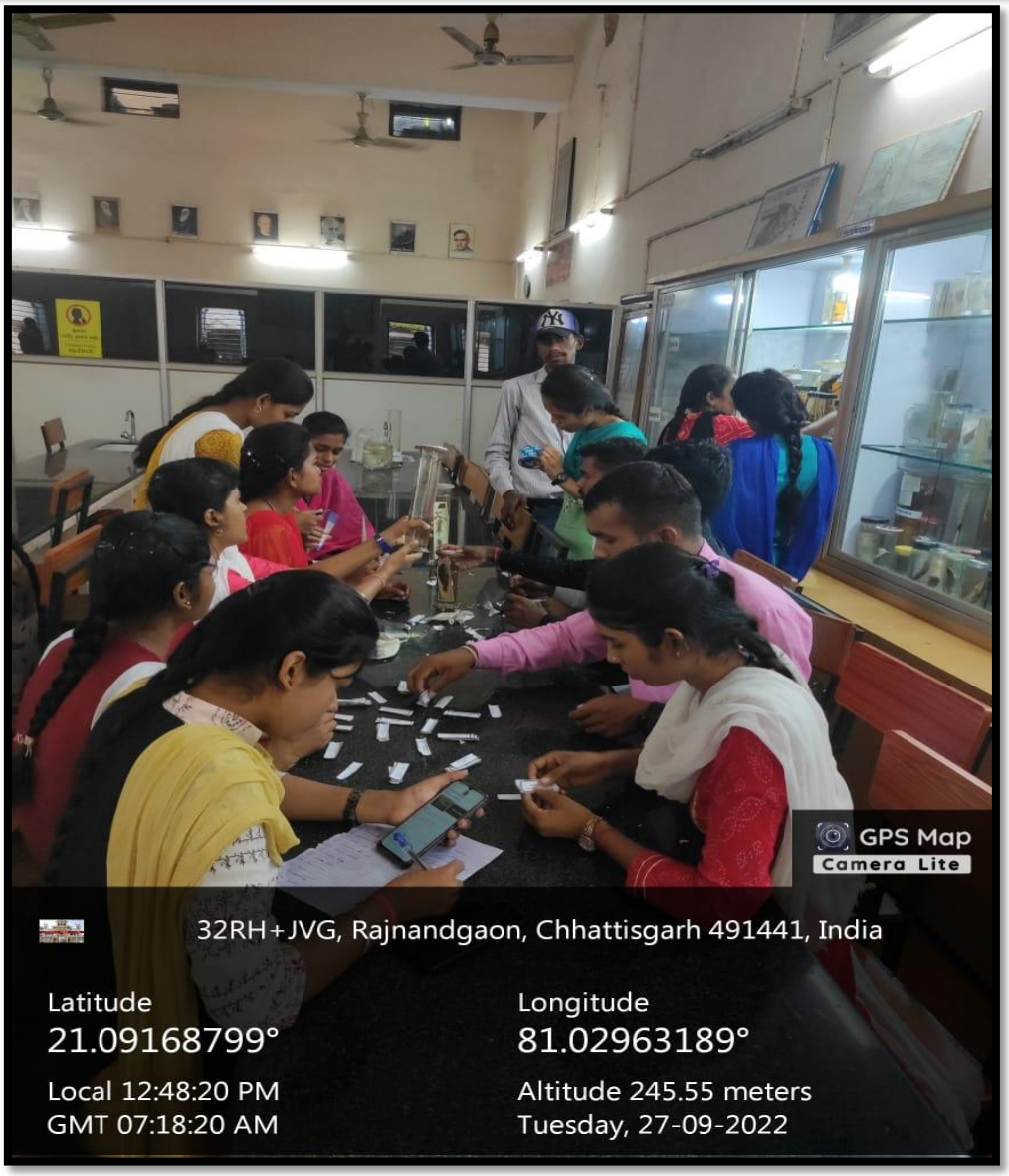
GPS Map
Camera Lite
32RH+JVG, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India
Latitude
21.09168799°
Longitude
81.02963189°
Local 12:48:20 PM
GMT 07:18:20 AM
Altitude 245.55 meters
Tuesday, 27-09-2022

**13. महाविद्यालय विकास एवं प्रबंधन में विभाग के प्राध्यापकों का व्यक्तिगत योगदान**

| प्राध्यापक का नाम | योगदान |
|---|---|
| डॉ. किरणलता दामले | विभागाध्यक्ष, छात्र संघ प्रभारी, सुचना का अधिकार प्रभार, अनुशासन समिति प्रभारी। |
| डॉ. संजय ठिस्के | रोजगार |
| डॉ. माजिद अली | जल परिक्षण की विस्तृत जानकारी |
| श्री. गुरप्रीत भाटिया एवं श्री. चिरंजीव पांडे | मतस्य पालन एवं मछलियों में होने वाले रोगों की जानकारी |
| श्रीमती. करुणा रावते | एन.एस.एस. अधिकारी |
| श्री. महेश लाडेकर | प्रायोगिक कार्यों में सहयोग |

**15. महाविद्यालय की प्रज्ञा- पत्रिका में आपके विभाग द्वारा कितनी रचनाएँ दी गई**

प्राध्यापक: 01
विद्यार्थी: लेख: 01, कविता: 02.

**16. स्नातकोत्तर स्तर पर शोध के लिए किए गए आपके प्रयास एवं उप्लाब्धियाँ**

- छात्र सेमीनार व प्रोजेक्ट तैयार करते हैं, जिससे उनमें शोध के प्रति रुचि जागृत हो।

**17. मार्गदर्शन:**

- मेजर डॉ. श्रीमती किरण लता दामले द्वारा छात्र छात्राओं को पाठ्यक्रम, आंतरिक मूल्यांकन व परीक्षा संबंधित जानकारी प्रदान की जाती है.
- डॉ. संजय ठिसके द्वारा छात्र छात्राओं को रोजगार , कॅम्पस आदि की समय समय पर जानकारी दी जाती है.
- डॉ. माजिद अली के द्वार जल परिक्षण की विस्तृत जानकारी प्रदान की जाती है.
- श्री गुरप्रीत भाटिया एवं श्री चिरंजीव पांडे के द्वारा मतस्य पालन एवं मछलियों में होने वाले रोगों की जानकारी दी जाती है .
- श्रीमती करुणा रावटे द्वारा छात्र छात्राओं को एन .एस.एस. के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है.

**18. आपके विभाग की अन्य संस्थानों के साथ <u>Collaboration (MOU)</u> के तहत् गतिविधियों की जानकारी:**

मेमोरडंम आफ अन्डस्टैंडिंग (एम.ओ.यू) : शा स. दिग्विजय महा . राजनांदगाँव एवं विभिन्न महाविद्यालयों के मध्य एम .ओ.यू. सपंन्न हुआ। जिसके अंतर्गत विभाग में कई कार्यक्रम सम्पन्न हुए, जिसकी जानकारी निम्नानुसार है -

➢ **<u>अतिथि व्याख्यानः</u>**

एम.ओ.यू. के तहत् विषेश अतिथि व्याख्यान का आयोजन प्राणीशास्त्र परिषद के द्वारा किया या। आमंत्रित अतिथि विषय विषेशज्ञ श्री आलोक कुमार जोशी , शास. कमला देवी राठी स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय राजनांद गाँव व डॉ. उषा साहू , शास. व्ही.वाइ.टी. महाविद्यालय दुर्ग एवं डॉ. यासर कुरैशी, शास. महाविद्यालय खेरथा का परिचय देते हुए विभागाध्यक्ष द्वारा कार्यक्रम का उद्देश्य बताया। श्री जोशी ने प्रतियागी परीक्षाओं की तैयारी के संबंध में जानकारी दी। जिसमें पाठ्यक्रम , प्रश्न हल करने के तरीकों, मूल्यांकन व चयन प्रक्रिया, ग्रुप डिस्कशन और स्वअध्धन शामिल था। डॉ. उषा साहू ने विद्यार्थी जीवन में ही व्यक्तित्व निखार व सुधार हेतु विनम्र , आज्ञाकारी व सरल स्वभाव का होना चाहिए। प्रतियागी परीक्षाओं के साक्षात्कार के लिए भी विद्यार्थी काल से ही तैयारी करना चाहिए। डॉ. कुरैशी ने नेट –सेट परीक्षाओं की तैयारी पर महत्व पूर्ण जानकारी दी। व्याख्यान पश्चात् अतिथि विषय विषेशज्ञों को विभागाध्यक्ष द्वारा प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया।

**अतिथि व्याख्यानः श्री आलोक कुमार जोशी**

अतिथि व्याख्यानः डॉ. उषा साहू

- <u>विश्व जन्तु दिवसश :</u>

विस्तार गतिविधी के तहत् विश्व जन्तु दिवस एवं विश्व वन्य जीव दिवसः शास . दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव ए शास. कमला देवी राठी महिला महाविद्यालय राजनांदगांव एवं शास . महिला महाविद्यालय दुर्ग के संयुक्त तत्वाधन मे प्राणीशास्त्र विभाग के स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थीयो द्वारा विश्व जन्तु दिवस श्के अवसर पर विश्व के दुर्लभ प्राणियों की प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। जिसमें जंतुओं के स्पेसिमेन , चार्ट, पोस्टर, मॉडल एवं पाव र पाइंट प्रेजेंटेशन आदि की सहायता से विलुप्त हो रही प्रजातियों एवं जीवाश्म से अवगत कराया। उड़ने वाली छिपकली और सर्प मछली जो तैर नहीं सकती। महंत राजा दिग्विजय दास जी के समय के 'शेर व 'मगर' आकर्षक का केन्द्र रहे। इस प्रदर्शनी में राजनांदगांव जिले के पॉच वि द्यालय के विद्यार्थीयो को आमंत्रित किया गया जिससे जंतुओं के प्रति उनकी रुचि जागृत हो और उनकी जिज्ञासा का समाधान हो सके। दुर्लभ प्राणियों की प्रदर्शनी का अवलोकन करने हेतु राजनांदगांव जिले के नीरज पब्लिक उ .मा. स्कूल, गायत्री विद्यापीठ उ .मा. विद्यालय, वाइडनर मेमोरियल उ .मा. विद्यालय, बल्देव प्रसाद मिश्र उ .मा. विद्यालय, एवं स्वामी आत्मानन्द उ .मा. विद्यालय के अध्यापकों और छात्र छात्राओं को आंमत्रित किया।

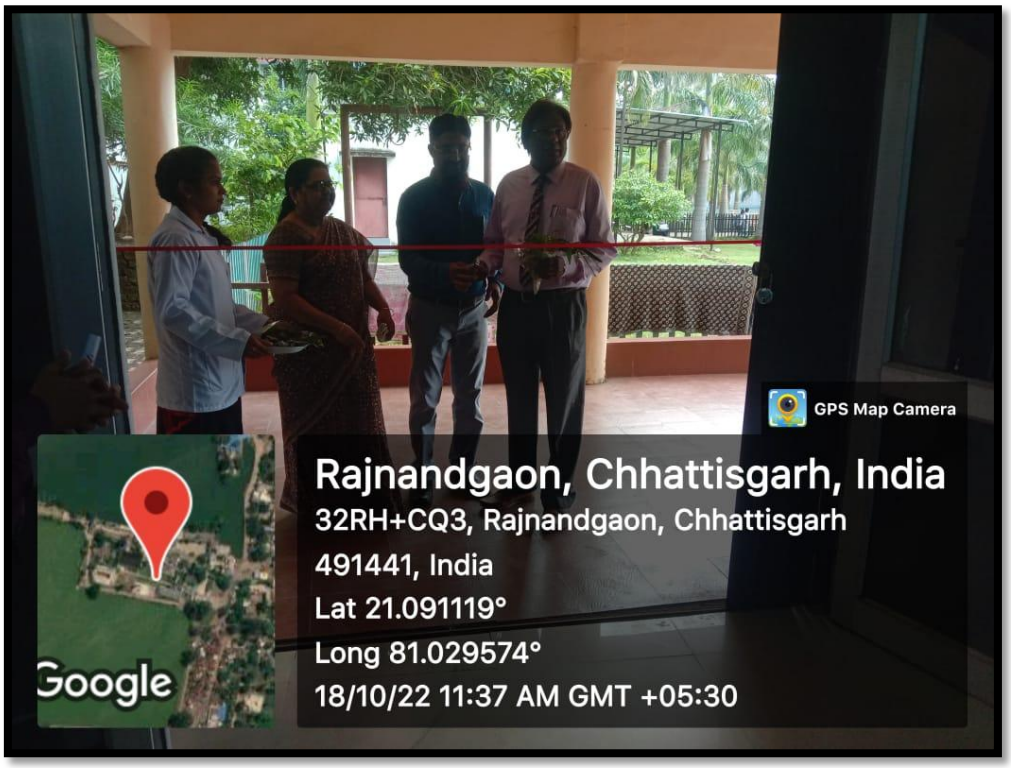

GPS Map Camera
Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
32RH+CQ3, Rajnandgaon, Chhattisgarh
491441, India
Lat 21.091119°
Long 81.029574°
18/10/22 11:38 AM GMT +05:30
Google

Govt. Digvijay Auto. P.G. College Rajnandgaon (C.G.)
"WORLD ANIMAL DAY"
DRACO
PANGOLIN

GPS Map Camera
Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
32RH+CQ3, Rajnandgaon, Chhattisgarh
491441, India
Lat 21.091126°
Long 81.029449°
18/10/22 12:01 PM GMT +05:30
Google

23/05/2022 नई दुनिया

## जीव-जंतुओं के संरक्षण का लिया संकल्प

राजनांदगांव। दिग्विजय महाविद्यालय के प्राणी शास्त्र विभाग द्वारा विश्व जैव विविधता दिवस मनाया गया। विद्यार्थियों को प्रकृति के संरक्षण का महत्त्व समझाया। वहीं विद्यार्थियों ने जीव-जंतुओं के संरक्षण का संकल्प भी लिया। विशेषज्ञों ने बताया कि जीव के नष्ट होने से इकोसिस्टम का संतुलन बिगड़ जाता है।

Scanned with CamScanner

## विश्व वन्य जीव दिवस मना

राजनांदगांव। विश्व वन्य जीव दिवस पर शासकीय दिग्वजय कॉलेज के प्राणी शास्त्र विभाग में गत दिनों प्राचार्य डॉ. केएल टांडेकर के निर्देशन में विश्व वन्य जीव दिवस का आयोजन किया गया। उद्घाटन अवसर पर प्राचार्य ने अपने विचार रखे। एक दिवसीय व्याख्यान माला में विशेष वक्ता डॉ. एलपी नागपुरकर ने विस्तार से जैव विविधता और उसमें हो रही गिरावट पर छात्रों को जानकारी दी। प्राध्यापक डॉ. संजय ठिसके ने वन्य जीवों और उनके पारिस्थितिकी तंत्र के बीच संबंध पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। छात्रा हेमिन सिन्हा ने वन्य जीवों की सुरक्षा पर विशेष कविता का वाचन किया। कार्यक्रम पश्चात प्राध्यपकों एवं प्राचार्य द्वारा वृक्षारोपणा किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. माजिद अली ने किया। इस अवसर पर उषा ठाकुर, श्रीमती खान, डॉ. केएल देवांगन, सविता चंद्रवंशी एवं एमएससी विज्ञान के समस्त छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

Scanned with CamScanner

- **<u>राष्ट्रिय पक्षी दिवस:</u>**

राष्ट्रिय पक्षी दिवस पर अतिथि व्याख्यानः शास . दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव, शास. कमला देवी राठी महिला महाविद्यालय राजनांदगांव एवं शास. विज्ञान महाविद्यालय राजनांदगांव के संयुक्त तत्वाधन मे प्राणीशास्त्र विभाग के स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थीयो द्वारा "राष्ट्रिय पक्षी दिवस " के अवसर पर पक्षियों को संरक्षित करने की पहल करते हुए दो दिवसीय कार्यशाला एवं प्रदर्शनी का आयो जन किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. किरण लता दामले ने कार्यशाला एवं प्रदर्शनी के उद्देश्य को बताते हुए बताया कि राष्ट्रिय पक्षी दिवस पक्षी विशेषज्ञ 'पक्षी मानव' पक्षियों के मसीहा एवं पद्यमविभूषण से सम्मानित डॉ. सलीम अली के जन्मदिवस पर मनाया जाता है। वर्तमान में पक्षियों के संरक्षण हेतु जागरुकता आवश्यक है। प्रदूषित होते पर्यावरण से पक्षियों की संख्या में लगातार कमी आ रही है। इस कार्यशाला के माध्यम से विद्याथियों को पर्यावरण एवं पक्षियों की सुरक्षा के लिए घर पर पाई जाने वाली अनुपयोगी वस्तुओं से पक्षियों के कृत्रिम धोंसला बनाने के लिए प्ररित करना है जिससे पक्षियों को संरक्षित किया जा सके। प्राचार्य डॉ. के एल टांडेकर ने विद्यार्थियों को पक्षियों की सुरक्षा व संरक्षण के इस प्रयास की सराहना की व बधाई दी।

कार्यशाला के मुख्य सूगधार "प्रकृति मितान" से सम्मानित श्री थान सिंह साहू जिन्हें पर्यावरण के क्षेत्र में नेहरु युवा केन्द्र राजनांद गाँव द्वारा आयोजित "बेस्ट

वालिंटियर अवार्ड एवं यूनाइटेड नेशन इण्डिया वालिंटियर वेबिनार यूथ स्पार्क चेंज्मेकर " में पुरुस्कार प्राप्त है , ने छात्र छात्राओं को अनुवयो गी वस्तुओं जैसे पेडों की छाल , जूट की बोरिया व रस्सी , पैरा, कार्टून के डब्बे आदि से कृत्रिम धोंसला बनाना सिखया , एवं विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न स्थानों से एकत्रित किए हुए धोंसलों को एकत्र कर प्रदर्शनी लगाई गई। गत वर्ष भी घोसला निर्माण पर महाविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन स्नातकोत्तर स्तर पर किया गया था। छात्र–छात्राओं ने महाविद्यालय एवं अपने घरों में कुछ घोसले लगाए थे। नियमित अवलोकन किया एवं पाया कि शत–प्रतिशत तो नही लेकिन चिड़ियों ने कुछ कृत्रिम घोसलों में अपना निवास बनाया। एवं घोंसलों मे चार पीढिंयां तक पाई गई। इसी प्रतिक्रिया को देखते हुए इस वर्ष राष्ट्रीय पक्षी दिवस पर कृत्रिम घोंसला निर्माण के लिए प्रयास गया।

नवभारत 16-11-2022

नवभारत my city राजनांदगांव

## दिग्विजय कॉलेज में मना राष्ट्रीय पक्षी दिवस

राजनांदगांव. शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में "राष्ट्रीय पक्षी दिवस" के अवसर पर प्राचार्य डॉ. के.एल. टाण्डेकर के मार्गदर्शन में प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा 12-11-2022 को महाविद्यालय स्तर पर पक्षियों के कृत्रिम घोसला निर्माण की कार्यशाला का आयोजन किया गया. शहरीकरण और वनों के विनाश से पक्षियों के आवास नष्ट हो रहे हैं. जिससे उनकी संख्या में कमी आ रही है. प्रदूषित वातावरण में पक्षियों को संरक्षित करने के प्रयास हेतु एक पहल करते हुए, विभाग में दो दिवसीय कार्यशाला एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया.

## एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

राजनांदगांव. शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव में प्राचार्य डॉ. के.एल. टांडेकर के मार्गदर्शन में महाविद्यालय के मानव संसाधन विकास समिति द्वारा फैकल्टी डेव्हलोपमेंट प्रोग्राम के तहत महाविद्यालय के प्राध्यापकों/सहा.प्राध्यापकों/अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें विषय विशेषज्ञ के रुप में आर.सी. जैन (सेवा निवृत्त संयुक्त संचालक, लेखा एवं कोषालय, मध्य प्रदेश शासन ) ने ''शासकीय सेवा के दौरान वित्तीय नियमों का महत्व'' विषय पर व्याख्यान दिया.


CS Scanned with CamScanner

# पक्षियों की 146 प्रजातियों की पहचान

**पक्षियों की लगभग 150 प्रजातियों की पहचान की है**

**संथाली और हिंदी में इन प्रजातियों के नाम भी संकलित**

वन अधिकारी अजिंक्य बांकर का मानना है कि पक्षियों के संरक्षण के लिए जागरुकता अभियान महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है और इसके लिए उन्होंने पिछले दो वर्षों में यहां से लगभग 210 किलोमीटर दूर झारखंड के जामताड़ा जिले में पक्षियों की लगभग 150 प्रजातियों की पहचान की है। जिले में पक्षियों की 146 प्रजातियों की पहचान करने के अलावा, जामताड़ा के संभागीय वन अधिकारी (डीएफओ) बांकर ने संथाली और हिंदी में इन प्रजातियों के नाम भी संकलित किए हैं ताकि आम लोग उन्हें आसानी से पहचान सकें और संरक्षण के लिए प्रयास करें। इनमें से कई प्रजाति दुर्लभ हैं। उन्होंने पक्षियों को आर्किषत करने वाले पेड़ों का दायरा बढ़ाने की भी पहल की है।

झारखंड को हालांकि व्यापक हरियाली के कारण पक्षियों के लिए एक सुरक्षित निवास स्थान माना जाता है, लेकिन शिकारी अकसर इनका शिकार करते हैं। बांकर ने कहा, मैंने पाया कि क्षेत्र में पक्षियों का शिकार चिंता का विषय है। यहां तक कि स्कूली बच्चे भी उन्हें मार रहे हैं क्योंकि वे पर्यावरण और समाज के लिए उनके महत्व से अनजान हैं। इसलिए मैंने जागरूकता अभियान शुरू करने का फैसला किया।

**40 जोखिम श्रेणी वाले प्रवासी पक्षी**

अधिकारी ने कहा कि दो वर्षों के सर्वेक्षण में पक्षियों की 146 प्रजातियों की पहचान की गई जिनमें से 40 जोखिम श्रेणी वाले प्रवासी पक्षी शामिल हैं। अधिकारी ने कहा कि इस कवायद के दौरान कॉमन पोचार्ड, इंडियन रिवर टर्न, वूली-नेकड स्टॉर्क, ब्लैक-हेडेड आइबिस और एलेक्जेंडरिन पैराकीट जैसी कई दुर्लभ प्रजातियां पाई गईं। उन्होंने कहा, चूंकि स्थानीय लोग पक्षियों के अंग्रेजी नामों से परिचित नहीं हैं, इसलिए हमने इसे स्थानीय संथाली भाषा और हिंदी में संकलित करने का फैसला किया है। बांकर के प्रयासों की इंडियन बर्ड कंजर्वेशन नेटवर्क ने उनकी सराहना की है।

**40 लोगों को पक्षी संरक्षण में प्रशिक्षित किया**

बांकर ने कहा कि जागरूकता फैलाने के लिए लगभग 40 लोगों को पक्षी संरक्षण में प्रशिक्षित किया गया है। उन्होंने कहा, उनका दायित्व लोगों में पक्षी संरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करना है। अब हमें अच्छे परिणाम मिल रहे हैं क्योंकि ग्रामीण अब पक्षी संरक्षण और बचाव में मदद कर रहे हैं। बांकर ने कहा, हमने पक्षियों के आवास में सुधार के लिए जिले में पीपल, बरगद और गूलर के पेड़ उगाने पर अधिक ध्यान केंद्रित किया क्योंकि वे पर्यावरण में अनुकूल माहौल निर्माण में योगदान करते हैं। आईबीसीएन के झारखंड समन्वयक सत्यप्रकाश ने कहा, मैं अधिकारी की पहल की सराहना करता हूं। लेकिन, अगर हम पक्षियों के लिए उचित संरक्षण चाहते हैं, तो हमें राज्य भर में इस तरह की पहल की जरूरत है। इसके अलावा, वन विभाग को पक्षियों की उचित निगरानी भी सुनिश्चित करनी चाहिए।

नवभारत
छत्तीसगढ़ • ओडिशा
Rajnandgaon - 16 Nov 2022 - 16rajn4

नवभारत my city

## दिग्विजय कॉलेज में मना राष्ट्रीय पक्षी दिवस

राजनांदगांव. शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में "राष्ट्रीय पक्षी दिवस" के अवसर पर प्राचार्य डॉ. के.एल. टाण्डेकर के मार्गदर्शन में प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा 12-11-2022 को महाविद्यालय स्तर पर पक्षियों के कृत्रिम घोसला निर्माण की कार्यशाला का आयोजन किया गया. शहरीकरण और वनों के विनाश से पक्षियों के आवास नष्ट हो रहे हैं. जिससे उनकी संख्या में कमी आ रही है. प्रदूषित वातावरण में पक्षियों को संरक्षित करने के प्रयास हेतु एक पहल करते हुए, विभाग में दो दिवसीय कार्यशाला एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया.

- **<u>विश्व मात्स्यिकी दिवस (World Fisheries Day) :</u>**

विश्व मात्स्यिकी दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों में अभिरूचि जागृत करने व विभिन्न प्रयोगों की जानकारी प्रदान करने हेतु स्नात्कोत्तर एवं औद्योगिक मत्स्य एवं मात्स्यिकी के विद्यार्थियों के लिए अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया।

अतिथि/विशेषज्ञों के नाम –

**– श्री दिलीप श्रीवास्तव , सेवा निवृत मात्स्यिकी निरीक्षक , दल्ली राजहरा (बालोद) छ.ग.**

**– श्री अरविन्द रजक, मत्स्य निरीक्षक, अंबागढ़ चौकी राजनांदगाँव (छ.ग.)**

विभागाध्यक्ष ने विश्व मात्स्यिकी दिवस का इतिहास बताते हुए कहा कि स्थाई मत्स्य पालन की प्रथाओं एवं वैश्विक जनादेश की नीतियों को बनाने के लिए **21 नवंबर 1997** में विश्व मत्स्य फोरम नई दिल्ली में निर्मित किया गया। जिसका उद्देश्य अंर्तदेशीय संसाधनो की स्थिरता के लिए एवं आवास, आपदा, मछलियों का अतिदोहन एवं अन्य गंभीर खतरों की ओर ध्यान केंद्रित करना था। यह दिन इसलिए भी मनाया जाता है ताकि स्वस्थ्य महासागरो के परिस्थितकीय तंत्रों के महत्व को उजागर किया जा सके , साथ ही दुनिया भर में मत्स्य पालन के स्थाई भण्डार को सुनिश्चित किया जा सकें। प्राचार्य डॉ.के.एल. टांडेकर ने अपने वक्तव्य मे कहा कि मत्स्यिकी के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावना है । महाविद्यालय के स्नातक स्तर पर महत्व एवं मत्स्यिकी के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावना है, महाविद्यालय स्तर पर मत्स्य एवं मत्स्यिकी की कक्षाए भी संचालित है । इस प्रकार के आयोजन से विद्याथिर्यो को आवश्यक जानकारी मिलती है एवं उन्होने इस आयोजन के लिए विभाग की सराहना कर बधाई दी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री दिलीप श्रीवास्तव ने मछलियों के प्रजनन की कृत्रिम विधि को बताते हुए विभिन्न हेचरी के प्रकारों को विस्तार से समझाया। अतिथि व्याख्याता श्री अरविन्द रजक ने केंद्र एवं छत्तीसगढ़ शासन द्वारा संचालित नील क्रांति योजना 'राष्ट्रीय कृषि विकास योजना ' राज्य पोषित योजना 'मुख्यमंत्री कौशल प्रशिक्षण ' आदि की जानकारी देते हुए बताया कि किस प्रकार मछलीपालन के लिए शासन लघु एवं वृहद् स्तर पर शासन 40 से 60 प्रतिशत की सब्सिडी दे रही है । रोजगार के दृष्टिकोण से मछलीपालन के क्षेत्र में कम लागत में अधिक उत्पादन कर व्यवसाय किया जा सकता हैद्य कार्यक्रम का समापन करते हुए सहा . प्राध्यापक श्री चिरंजीव पाण्डेय ने मुख्य अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर प्राणीशास्त्र विभाग के समस्त प्राध्यापक एवं स्नातक मत्स्य एवं मत्सियिकी व स्नातकोत्तर स्तर के समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे।

GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE RAJNANDGAON (C.G.)
INDUSTRIAL FISH AND FISHERIES
DEPARTMENT OF ZOOLOGY

WORLD FISHERIES DAY
GPS Map Camera Lite
32RJ+G2Q, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़ 491441, भारत
Latitude
21° 5' 28.73184" N
Longitude
81° 1' 48.29884" E
Local 12:59:57 pm
GMT 07:29:57 am
Altitude 34.84 फीट
सोमवार, 21.11.2022

GOVT.DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE RJN (C.G.)
INDUSTRIAL FISH AND FISHERIES
DEPARTMENT OF ZOOLOGY

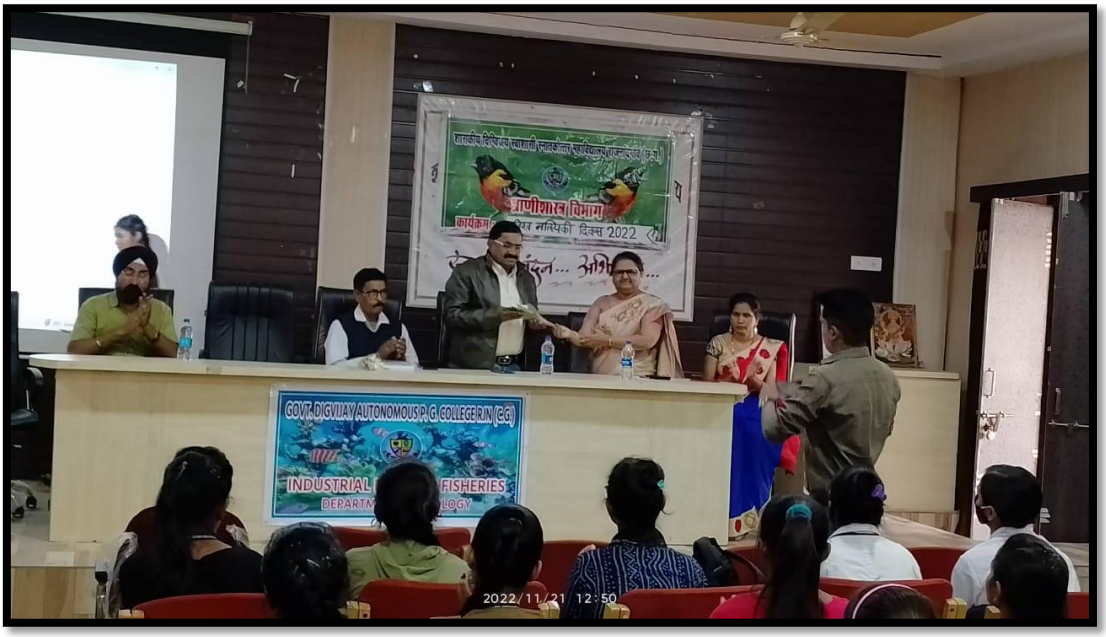
GOVT.DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE RJN (C.G.)
2022/11/21 12:50

18. आपके विभाग के कितने विधार्थियों ने अन्य गतिविधियों में भागीदारी व उपलब्धियों का उल्लेख करें.

- खेलकूद: 12 महाविद्यालयीन खेलकूद
- सांस्कृतिक: 04 समूह नृत्य
- साहित्यिक: वार्षिक पत्रिका में लेख व कविता
- एनएसएस: 2 छात्र

**19. कार्यालयीन आदेश के परिपालन के आलावा आपके विभाग द्वारा महाविद्यालय के उच्चशिक्षा गुणवत्ता विकास एवं विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रगति के लियर गए 'नवाचार' की जानकारी:**

- महाविद्यालय में बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर में नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं को महाविद्यालय का परिचय कार्यक्रम आयोजित किया गया.
- नया कोर्स NEP - 2020 के बारे में विस्तृत जानकारी डी गयी.
- Choice Based Credit System के विषय में समझाया गया.

दावा 8/9/22

# दिग्विजय महाविद्यालय में इंडक्शन प्रोग्राम का आयोजन



राजनांदगांव (दावा)। शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के स्वशासी परीक्षा प्रकोष्ठ के द्वारा स्नातक प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिये तीन दिवसीय इंडक्शन प्रोग्राम का आयोजन 07 से 09 सितंबर तक आयोजित किया जा रहा है।

इंडक्शन प्रोग्राम के प्रथम दिनस बीएससी प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिये महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. के. एल. टाण्डेकर ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय में उपलब्ध सुविधाएं, महाविद्यालय के अनुशासन तथा नये पाठ्यक्रम के संबंध में बताया प्राचार्य डॉ. टाण्डेकर विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए बताया कि महाविद्यालय में इस वर्ष से चार वर्षीय सीबीसीएस सेमेस्टर पाठ्यक्रम लागू किया जा रहा है जिसमें मुख्य पाठ्यक्रम के अलावा कौशल विकास तथा अभिरूचि के पाठ्यक्रम को भी शामिल किया गया है। उन्होंने बताया कि इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होगा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए स्वशासी परीक्षा विभाग के नियंत्रक डॉ. अंजना ठाकुर ने बताया कि नई शिक्षा नीति छम्च् 2020 को महाविद्यालय में लागू किया जा रहा है। नई शिक्षा नीति के तहत सीबीसीएस सेमेस्टर पाठ्यक्रम सत्र 2022-23 से प्रथम वर्ष से लागू किया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों ने अपने स्वयं के रुचि के विषय चुनने का विकल्प होगा जिसमें एक फेकल्टी के विद्यार्थी किसी दूसरे फेकल्टी के विषय चुन सकता है। स्वशासी परीक्षा विभाग के उप नियंत्रक डॉ. हेमंत कुमार साव ने पीपीटी के माध्यम से सीबीसीएस सेमेस्टर पाठ्यक्रम के कोर्स करिकुलम, परीक्षा मूल्यांकन तथा परीक्षा अधिनियम के बारे में विस्तार से प्रस्तुतिकरण दिये। अपने प्रस्तुतिकरण में डॉ. साव ने बताया कि प्रत्येक प्रश्न पत्र में 33ः प्रतिशत न्यूनतम पासिंग नंबर होगा। प्रत्येक प्रश्न पत्र की परीक्षा दो भागों में होगा प्रथम भाग में आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा तथा द्वितीय भाग में सेमेस्टर परीक्षा होगा। विद्यार्थी को पास होने के लिये दोनों भाग के परीक्षा में 33 प्रतिशत अंक प्राप्त करना आवश्यक होगा। विद्यार्थी दो विषय में पूरक (एटीकेटी) पात्रता होगी। दो से अधिक विषय में अनुत्तीर्ण होने पर भूतपूर्व परीक्षार्थी माना जायेगा ऐसे विद्यार्थी को अगले सेमेस्टर में प्रवेश की पात्रता नहीं होगी। जो विद्यार्थी छठवे सेमेस्टर की परीक्षा अर्थात् तृतीय वर्ष की परीक्षा में 7.5 या उससे अधिक ब्ळच्। लाता है उन्हें चतुर्थ वर्ष में प्रवेश दिया जायेगा। चतुर्थ वर्ष में प्रवेश करने वाले विद्यार्थी के लिये स्नातकोत्तर का पाठ्यक्रम केवल एक वर्ष का होगा। चार वर्षीय पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले विद्यार्थी को आनर्स डिग्री/रिसर्च डिग्री प्रदान किया जाएगा।

ऐसे विद्यार्थी जिनका तृतीय वर्ष में सीजीपीए 7.5 से कम जाता है उनके लिये स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम दो वर्ष का होगा। उन्होंने आगे बताया कि सीबीसीएस नए पाठ्यक्रम में मल्टीपल एक्जिट एवं एण्ट्री का प्रावधान भी होगा। यदि विद्यार्थी प्रथम वर्ष (प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर) में 48 क्रेडिट पूर्ण करने के पश्चात् अपनी आगे की पढ़ाई ब्रेक करना चाहता है उन्हें एक वर्षीय सर्टीफिकेट प्रदान किया जायेगा। इसी प्रकार दो वर्षीय पाठ्यक्रम (प्रथम से चतुर्थ सेमेस्टर) पूर्ण करने के पश्चात् डिप्लोमा सर्टीफिकेट प्रदान किया जायेगा। तृतीय वर्ष (छः सेमेस्टर) पूर्ण करने के पश्चात् डिग्री प्रदान किया जायेगा। चतुर्थ वर्ष पूर्ण करने के पश्चात् आनर्स डिग्री प्रदान किया जायेगा। आईक्यूएसी के संयोजक डॉ. के.के. देवांगन अपने संबोधन में महाविद्यालय के विभिन्न नियम तथा सुविधाओं के बारे में विस्तार से बताया कार्यक्रम का संचालन स्वशासी प्रकोष्ट के सहायक नियंत्रक गोकुल निषाद ने किया उन्होंने बताया कि कार्यक्रम के दूसरे दिन बी.कॉम. तथा अंतिम दिन बी.ए. के विद्यार्थी इंडक्शन प्रोग्राम में शामिल होंगे। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. सुरेश पटेल, जिला संगठक एनएसएस द्वारा किया गया।

आयोजन | स्नातक प्रथम वर्ष सीबीसीएस पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों के लिये

# दिग्विजय कॉलेज में इंडक्शन प्रोग्राम का आयोजन

नवभारत रिपोर्टर । राजनांदगांव।



शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के स्वशासी परीक्षा प्रकोष्ट के द्वारा स्नातक प्रथम वर्ष सीबीसीएस पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों के लिये तीन दिवसीय इंडक्शन प्रोग्राम का आयोजन 07 से 09 सितंबर तक आयोजित किया जा रहा है. इंडक्शन प्रोग्राम के प्रथम दिनस बीएससी प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिये महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. के. एल. टाण्डेकर ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय में उपलब्ध सुविधाएं, महाविद्यालय के अनुशासन तथा नये पाठ्यक्रम के संबंध में बताया प्राचार्य डॉ. टाण्डेकर विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए बताया कि महाविद्यालय में इस वर्ष से चार वर्षीय सीबीसीएस सेमेस्टर पाठ्यक्रम लागू किया जा रहा है जिसमें मुख्य पाठ्यक्रम के अलावा कौशल विकास तथा अभिरूचि के पाठ्यक्रम को भी शामिल किया गया है उन्होंने बताया कि इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होगा. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए स्वशासी परीक्षा विभाग के नियंत्रक डॉ. अंजना ठाकुर ने बताया कि नई शिक्षा नीति छम्च् 2020 को महाविद्यालय में लागू किया जा रहा है. नई शिक्षा नीति के तहत सीबीसीएस सेमेस्टर पाठ्यक्रम सत्र 2022-23 से प्रथम वर्ष से लागू किया जा रहा है. इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों ने अपने स्वयं के रुचि के विषय चुनने का विकल्प होगा जिसमें एक फेकल्टी के विद्यार्थी किसी दूसरे फेकल्टी के विषय चुन सकता है.

स्वशासी परीक्षा विभाग के उप नियंत्रक डॉ. हेमंत कुमार साव ने पीपीटी के माध्यम से सीबीसीएस सेमेस्टर पाठ्यक्रम के कोर्स करिकुलम, परीक्षा मूल्यांकन तथा परीक्षा अधिनियम के बारे में विस्तार से प्रस्तुतिकरण दिये. अपने प्रस्तुतिकरण में डॉ. साव ने बताया कि प्रत्येक प्रश्न पत्र में 33ः प्रतिशत न्यूनतम पासिंग नंबर होगा. प्रत्येक प्रश्न पत्र की परीक्षा दो भागों में होगा प्रथम भाग में आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा तथा द्वितीय भाग में सेमेस्टर परीक्षा होगा. विद्यार्थी को पास होने के लिये दोनों भाग के परीक्षा में 33ः अंक प्राप्त करना आवश्यक होगा.

नवभारत 8/9/22

# बच्चों को नई शिक्षा नीति से कराया रूबरू

राजनांदगांव(वि.)। दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के स्वशासी परीक्षा प्रकोष्ठ के द्वारा स्नातक प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए तीन दिवसीय इंडक्शन प्रोग्राम का आयोजन किया जा रहा है। इंडक्शन प्रोग्राम में विद्यार्थियों को नई शिक्षा नीति की जानकारी दी जा रही हैं। इंडक्शन प्रोग्राम के प्रथम दिनस बीएससी प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य डा.केएल टांडेकर ने महाविद्यालय में उपलब्ध सुविधाएं, महाविद्यालय के अनुशासन तथा नये पाठ्यक्रम के संबंध में बताया। प्राचार्य डा. टांडेकर ने बताया कि महाविद्यालय में इस वर्ष से चार वर्षीय सीबीसीएस सेमेस्टर पाठ्यक्रम लागू किया जा रहा है। जिसमें मुख्य पाठ्यक्रम के अलावा कौशल विकास तथा अभिरूचि के पाठ्यक्रम को भी शामिल किया गया है। इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होगा।

स्वशासी परीक्षा विभाग के नियंत्रक डा.अंजना ठाकुर ने बताया कि नई शिक्षा नीति 2020 को महाविद्यालय में लागू किया जा रहा है। नई शिक्षा नीति के तहत सीबीसीएस सेमेस्टर पाठ्यक्रम सत्र 2022-23 से प्रथम वर्ष से लागू किया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों ने अपने स्वयं के रूचि के विषय चुनने का विकल्प होगा जिसमें एक फेकल्टी के विद्यार्थी किसी दूसरे फेकल्टी के विषय चुन सकता है।

**बीच में ब्रेक कर सकेंगे पढ़ाई:** ऐसे विद्यार्थी जिनका तृतीय वर्ष में सीजीपीए 7.5 से कम जाता है उनके लिये स्नातकोत्तर पाठयक्रम दो वर्ष का होगा। उन्होंने आगे बताया कि सीबीसीएस नए पाठ्यक्रम में मल्टीपल एक्जिट एवं एण्ट्री का प्रावधान भी होगा। यदि विद्यार्थी प्रथम वर्ष (प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर) में 48 क्रेडिट पूर्ण करने के बाद अपनी आगे की पढ़ाई ब्रेक करना चाहता है उन्हें एक वर्षीय सर्टीफिकेट प्रदान किया जाएगा।

इसी प्रकार दो वर्षीय पाठ्यक्रम (प्रथम से चतुर्थ सेमेस्टर) पूर्ण करने के पश्चात डिप्लोमा सर्टिफिकेट प्रदान किया जाएगा। तृतीय वर्ष (छह सेमेस्टर) पूर्ण करने के पश्चात डिग्री प्रदान किया जाएगा। चतुर्थ वर्ष पूर्ण करने के बाद आनर्स डिग्री प्रदान किया जाएगा। आइक्यूएसी के संयोजक डा.केके देवांगन ने महाविद्यालय के विभिन्न नियम तथा सुविधाओं के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम का संचालन स्वशासी प्रकोष्ट के सहायक नियंत्रक गोकुल निषाद ने किया।



कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को नई शिक्षा नीति की दी जानकारी। • कालेज प्रबंधन

## पासिंग के लिए 33 प्रतिशत जरुरी

शासी परीक्षा विभाग के उप नियंत्रक डा.हेमंत कुमार साव ने पीपीटी के माध्यम से सीबीसीएस सेमेस्टर पाठ्यक्रम के कोर्स करिकुलम, परीक्षा मूल्यांकन तथा परीक्षा अधिनियम के बारे में विस्तार से प्रस्तुतिकरण दिए। डा.साव ने बताया कि प्रत्येक प्रश्न पत्र में 33प्रतिशत न्यूनतम पासिंग नंबर होगा। प्रत्येक प्रश्न पत्र की परीक्षा दो भागों में होगा प्रथम भाग में आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा तथा द्वितीय भाग में सेमेस्टर परीक्षा होगा। विद्यार्थी को पास होने के लिए दोनों भाग के परीक्षा में 33प्रतिशत अंक प्राप्त करना आवश्यक होगा। विद्यार्थी दो विषय में पूरक (एटीकेटी) पात्रता होगी। दो से अधिक विषय में अनुत्तीर्ण होने पर भूतपूर्व परीक्षार्थी माना जाएगा। ऐसे विद्यार्थी को अगले सेमेस्टर मे प्रवेश की पात्रता नहीं होगी, जो विद्यार्थी छठवे सेमेस्टर की परीक्षा अर्थात्तृतीय वर्ष की परीक्षा में 7.5 या उससे अधिक अंक लाता है उन्हें चतुर्थ वर्ष में प्रवेश दिया जाएगा। चतुर्थ वर्ष में प्रवेश करने वाले विद्यार्थी के लिये स्नातकोत्तर का पाठ्यक्रम केवल एक वर्ष का होगा। चार वर्षीय पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले विद्यार्थी को आनर्स डिग्री, रिसर्च डिग्री प्रदान किया जाएगा।

Scanned with CamScanner

## 20. अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियाँ:

- **<u>अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन सप्ताह के अंतर्गत सी.आर.सी. कार्यक्रम –</u>**

दिग्विजय महाविद्यालय में स्पीच, हियरिंग एवं साईंन लैंग्वेज पर कार्यशाला : दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय , राजनांदगाँव. (छ.ग.) में प्राणीशास्त्र विभाग एवं दिव्यांगजन पुनर्वास हेतु समर्पित , क्षेत्रीय संयोजित केंद्र (सी.आर.सी.) राजनांदगाँव. के संयुक्त तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन सप्ताह के अवसर पर डॉ दिवसीय जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया . विभागाध्यक्ष डॉ. किरण लता दामले ने सी.आर.सी. संस्था का परिचय देते हुए इनके पुनीत उद्देश्य एवं दिव्यांगजन के विकास हेतु किए जा रहे प्रयास पर प्रकाश डाला . प्राचार्य डॉ. के एल टांडेकर ने डॉ दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम की आवश्यकता पर विस्तारपूर्वक चर्चा की . सी.आर.सी. संसथान की आमंत्रित मुख्या वक्ता श्रीमती स्मिता महोबिया सहा .प्रा. द्वारा मूक-बधिर दिव्यांगजन के लिए स्पीच , हियरिंग एवं साईंन लैंग्वेज के प्रयाग पर बैनर, पोस्टर एवं प्रोजेक्टर के माध्यम से रुचिकर व्याख्यान दिया . कार्यशाला के दुरे दिन छात्र-छात्राओं के लिए प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र का वितरण भी लिया गया।

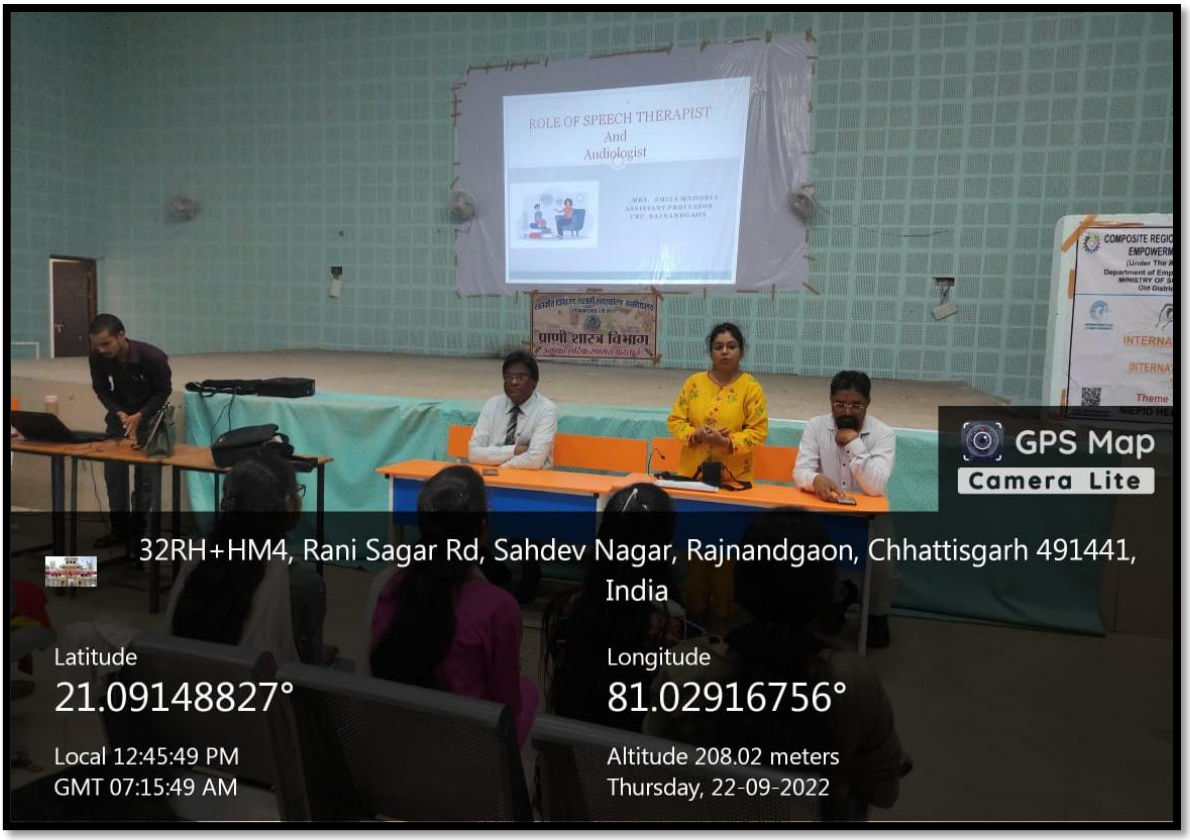

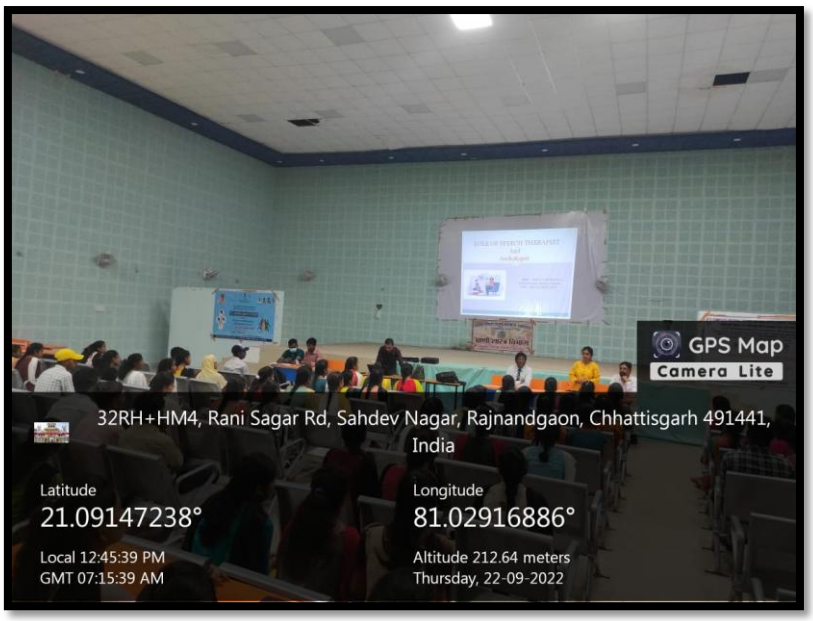
GPS Map
Camera Lite
32RH+HM4, Rani Sagar Rd, Sahdev Nagar, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India
Latitude
21.09147238°
Longitude
81.02916886°
Local 12:45:39 PM
GMT 07:15:39 AM
Altitude 212.64 meters
Thursday, 22-09-2022

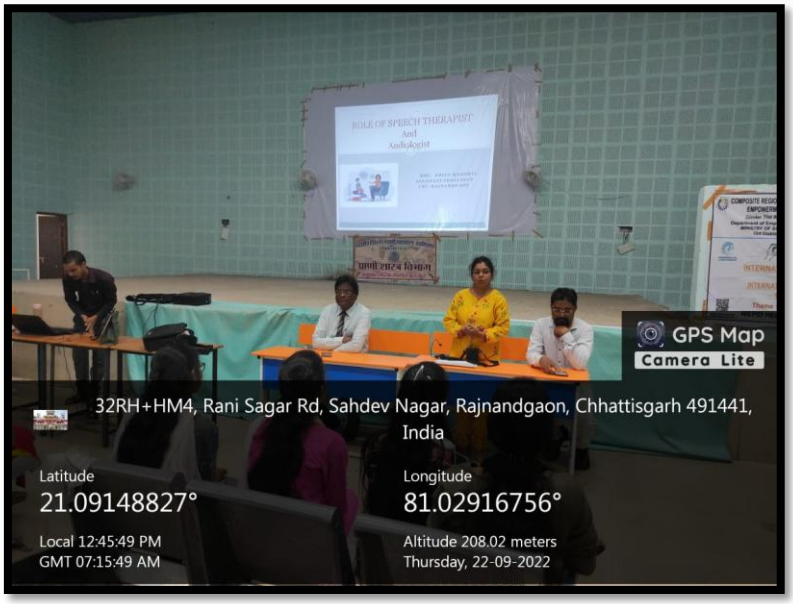
ROLE OF SPEECH THERAPIST
And
Audiologist
GPS Map
Camera Lite
32RH+HM4, Rani Sagar Rd, Sahdev Nagar, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India
Latitude
21.09148827°
Longitude
81.02916756°
Local 12:45:49 PM
GMT 07:15:49 AM
Altitude 208.02 meters
Thursday, 22-09-2022

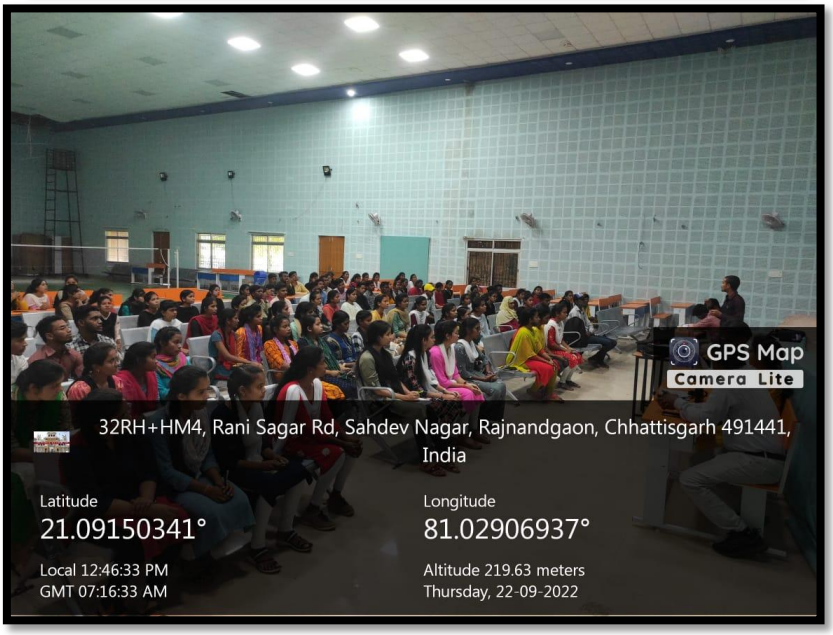
GPS Map
Camera Lite
32RH+HM4, Rani Sagar Rd, Sahdev Nagar, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India
Latitude
21.09150341°
Longitude
81.02906937°
Local 12:46:33 PM
GMT 07:16:33 AM
Altitude 219.63 meters
Thursday, 22-09-2022

सबेरा संकेत

राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्र

# सीआरसी सेंटर ने दिग्विजय के विद्यार्थियों को स्पीच थेरेपी के बारे में बताया

## मूक-बधिरों की दुनिया आसान बनाने चल रहा अभियान

**नगर प्रतिनिधि**

**राजनांदगांव, 21 सितम्बर। मूक-बधिरों की दुनिया आसान बनाने सीआरसी सेंटर द्वारा अभियान चलाया जा रहा है। उसके द्वारा आम लोगों को खासकर विद्यार्थियों को स्पीच थेरेपी और साइन लेंग्वेज के बारे में बताया जा रहा है ताकि लोग मूक-बधिरों की भाषा को समझे और समय पर उनकी सहायता कर सके।**

अभियान की को-आर्डिनेटर एवं असिस्टेंट प्रोफेसर स्मिता महोबिया ने 'सबेरा संकेत' को बताया कि स्पीच थेरेपी के माध्यम से जो बच्चा एक साल होने के बाद भी बोल या सुन नहीं पाता, उस बच्चे का उपचार किया जाता है। उन्होंने बताया कि स्पीच थेरेपी की आवश्यकता केवल बच्चों को ही नहीं बल्कि व्यस्कों खासकर वृद्धजनों को भी होती है। इससे उन्हें काफी फायदा भी होता है।

इसी तरह साइन लेंग्वेज के माध्यम से मूक-बधिरों द्वारा आपस में चर्चा की जाती है, साथ ही अपनी भाषा से आम लोगों को अपनी बात बतायी जाती है। उन्होंने बताया कि आम लोग भी यदि साइन लेंग्वेज समझने लगे तो मूक-बधिरों की दुनिया आसान हो जायेगी। उन्होंने बताया कि इस अभियान के तहत आज दिग्विजय कॉलेज में इसका आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में विद्यार्थी शामिल हुए।

---

नवभारत

Rajnandgaon - 29 Sep 2022 - 29rajn3

छत्तीसगढ़ • ओडिशा

नवभारत my city

## दिग्विजय कॉलेज में साइन लैंगवेज पर कार्यशाला

राजनांदगांव. दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राणीशास्त्र विभाग एवं दिव्यांगजन पुर्नवास हेतु समर्पित, क्षेत्रिय संयोजित केन्द्र महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. के.एल.तांडेकर की प्रेरणा व मार्गदर्शन में "अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन सप्ताह" के अवसर पर दो दिवसीय जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया. प्राणीशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. किरण लता दामले ने संस्था का परिचय देते हुए इसके पुनीत उद्देश्य दिव्यांगजन के विकास हेतु किए जा रहे प्रयास पर प्रकाश डाला.

---

सबेरा संकेत
3/10/22

र समाचार

## दिग्विजय में स्पीच-हियरिंग पर हुई कार्यशाला

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव में प्राणीशास्त्र विभाग एवं दिव्यांगजन पुनर्वास हेतु समर्पित, क्षेत्रिय संयोजित केन्द्र (सीआरसी) राजनांदगांव के संयुक्त तत्वावधान एवं प्राचार्य डॉ. के.एल. तांडेकर के मार्गदर्शन में 'अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन सप्ताह' के अवसर पर दो दिवसीय जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया।प्राणीशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. किरण लता दामले ने सीआरसी संस्था का परिचय देते हुए इसके पुनीत उद्देश्य दिव्यांगजन के विकास हेतु किए जा रहे प्रयास पर प्रकाश डाला। प्राचार्य ने दो दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम की आवश्यकता पर विस्तारपूर्वक चर्चा की. सीआरसी की सहा.प्रा. स्मिता महोबिया ने मूक-बधिर दिव्यांगजन के लिए स्पीच, हियरिंग एवं साइन लैंगवेज के प्रयोग पर बैनर, पोस्टर एवं प्रोजोक्टर के माध्यम से रूचिकर व्याख्यान दिया।

Scanned with CamScanner

- **<u>विश्व विद्यार्थी दिवसः</u>**

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के जन्म दिवस के अवसर पार प्राणीशास्त्र विभाग के स्नातकोत्तर के छात्र छात्राओं ने विश्व विद्यार्थी दिवस मनाया। इस दिन प्राचार्य महोदय , विभागीय प्राध्यापकों एवं छात्रों के द्वारा भूतपूर्व राष्ट्रपति डा . ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का परिचय देते हुए देश में बने परमाणु हथियारों के निर्माण व विकास में उनके योगदान पर प्रकाश डाला। उनके कार्यो एवं उनके जीवन पर प्रकाश डाला , और छात्रों के द्वारा सामूहिक चर्चा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। छात्र छात्राओं के लिए प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

## दिग्विजय में मिसाइल मेन डॉ. कलाम को याद किया

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के प्राणीशास्त्र विभाग में प्राचार्य डॉ. के.एल. तांडेकर के मार्गदर्शन में स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों द्वारा 'विश्व विद्यार्थी दिवस' के अवसर पर मिसाइल मैन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को जन्म दिवस पर याद किया गया। प्राणीशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. किरण लता दामले ने मिसाइल मैन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का परिचय दिया।

सबेरा संकेत 16/10/22

CS Scanned with CamScanner

नवभारत 18/10/22

आयोजन

### कलाम के दृढ़ निश्चय ने देश को रक्षा संपन्न बनाया : प्रोफ. रॉबिंसन

# दिग्विजय कॉलेज में याद किये गए मिसाइलमैन

नवभारत रिपोर्टर । राजनांदगांव।

नगर के शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनंदगांव में बायोटेक्नोलॉजी एवं भौतिकशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वाधान में भारतरत्न पूर्वराष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी की 91 वीं जयंती मनाया गया.इस कार्यक्रम में मुख्या अतिथि के रूप में प्रो. सी. एस. राबिन्सन बी. आई. टी. दुर्ग तथा अध्यक्षताके रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. के. एल. तांडेकर उपस्थित हुए.प्रो. राबिन्सन ने बताया कि यदि हम अब्दुल कलाम जी को आदर्श मानते है, तो हमें उनके कार्यो से प्रेरणा लेकर ईमानदारी से कार्य करना चाहिए.अब्दुल कलाम जी कैसे एक छोटे से गाँव और परिवार से निकल कर भारत के बहुत बड़े वैज्ञानिक बने तथा जनता के राष्ट्रपति बने इसका विस्तार में उन्होंने बताया.राबिन्सन ने बताया की जब वे भारतीय वायुसेना में चयनित नहीं हुए तब भी वे निराश नहीं हुए तथा रक्षा अनुसंधान एवं विकास संसथान में वैज्ञानिक के पद पर कार्य किया, राबिन्सन जी बताते हैं कि अब्दुल कलम जी 8 वर्षो तक उस कार्य को बहुत ही ईमानदारी पूर्वक किये जिनमे उनकी इच्छा नहीं, तथा छात्रों को यह सन्देश दिया की जीवन में हमें कभी हमारी इच्छाओं के अनुरूप कार्य नहीं मिलते, उस समय भी हमको जो कार्य मिला हाई उसे ईमानदारी पूर्वक करना चाहिए. इसी के साथ साथ कलाम के पी.एस.एल.वी.के सफल परिक्षण, परमाणु परिक्षण, तथा उनसे भारत को मिलने वाली अंतरिक्ष शक्ति और परमाणु शक्ति तथा उनके लाभ का विस्तृत रुपे जानकारी दी.कलाम जी की रचनाओ तथा उनकी जीवन पर लिखी गयी पुस्तकों के बारे में व छात्रों को जानकारी मिली.

- **<u>विश्व एड्स दिवसः</u>**

प्रतिवर्शानुसार इस वर्ष भी प्राणीशास्त्र विभाग के द्वारा इस वर्ष भी विश्व एड्स दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम में क्रिश्चन फैलोशिप चिकित्सालय के संरक्षक डा . मोन अब्राहम ने एड्स एवं एच.आई.वी. की बायोलाजी के बारे में एवं इसके फैलने के तरीकों पर विस्तार से चर्चा की . इसी अवसर पर आंमत्रित समता मंच के सचांलक श्री शिशुपाल जो कई वर्षो से एड्स पीडित व्यक्तियों के साथ कार्य कर रहे है ने इसके समाजिक पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डालते हुये बताया कि एड्स पीडित व्यक्तियों के साथ ज्यादा संवेदनशील होते हूये हमे सहानुभुतिपूर्वक व्यवहार करना चाहिये।

- **<u>शैक्षणिक भ्रमणः</u>**

**दाऊ बिहारी फिश फॉर्म अर्जुंदा स्थित**

दिग्विजय कॉलेज के मात्स्यिकी के विद्यार्थियों ने सीखे मछली पालन के तरीके ’– शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के मत्स्य एवं मात्स्यिकी के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों ने प्राचार्य डॉ . केएल टांडेकर के मार्गदर्शन एवं विभागाध्यक्ष डॉ किरण लता दामले के निर्देशन में शैक्षणिक भ्रमण किया। जिसमें उन्होंने अर्जुंदा स्थित दाऊ बिहारी फिश फॉर्म में इंडियन मेजर कार्प रोहू , कतला, और रूपचंदा मछली के लिए बने हैचरी , नर्सरी, रियरिंग, कल्चर और ब्रीडर पौंड , और उनके प्रबंधन की विस्तार से जानकारी प्राप्त की। साथ ही मछली पालन के लिए शासन द्वारा प्राप्त होने वाले विभिन्न प्रकार के योजनाओं का लाभ लेकर मत्स्य पालन को कैसे बढ़ाएं इस पर विस्तार से जानकारी प्राप्त की। तत्पश्चात विद्यार्थी ग्राम चंदखुरी जिला दुर्ग में आलोक चंद्रा द्वारा स्थापित निजी कंपोजिट फिश फार्मिंग यूनिट जहा डेयरी के साथ मछलियों के दाने और उनके तालाब के निर्माण में उपयोगी कच्चे माल का निर्माण कैसे होता है जाना , फिश कम पोल्ट्री कल्चर यूनिट देखी और समझा कि कैसे पोल्ट्री के साथ मत्स्य पालन किया जाता है। अशोक कुमार कनेरिया , दुर्ग द्वारा विद्यार्थियों को इंडियन मेजर कार्प – ग्रास कार्प, रोहू, कतला आदि के लिए रॉ फीड कल्चर (बरसीम, पेंसुएगन नेपियर ग्रास) एंड प्रोसेसिंग, समेत विभिन्न मत्स्य बीज उत्पादन और उसके प्रबंधन और सावधानियों को विस्तार से समझाया। विद्यार्थियों ने शिवनाथ नदी के समीप बने मत्स्य फॉर्म में आम के बागान में मछली के बीच के संचय और उनके लालन –पालन के जाए प्रयोग का विशेष रूप से अध्ययन भी किया। साथ ही हर्षिता साहू फिशरी इंस्पेक्टर ने केज में मछली पालन की विस्तार पूर्वक जानकारी दी।साथ अतिरिक्त समय में विद्यार्थियों ने मैत्री बाग जू में विभिन्न जीवों का अवलोकन भी किया।

**शैक्षणिक भ्रमण – बस्तर: विद्यार्थियों ने भ्रमण किया कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान**

प्राचार्य डॉ टांडेकर के .एल .के .मार्गदर्शन और विभागाध्यक्ष डॉ किरण लता दामले के नेतृत्व में शासकीय दिग्विज महाविद्यालय के प्राणिशास्त्र विभाग के स्नातकोत्तर के विद्यार्थियो ने दिनांक 18-03-23 से 19-03-23 तक बस्तर के प्रमुख पर्यटन स्थलों का शैक्षणिक भ्रमण किया। जगदलपुर से 40 किलोमीटर दूर स्थित कांगेर घाटी नेशनल पार्क का भ्रमण किया, भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने कांगेर घाटी नेशनल पार्क में संरक्षित वन , वहा मिलने वाले विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधों की प्रजातियां, औषधीय पौधेएवं जीव जंतु जैसे – उड़न गिलहरी आदि ,भारतीय बड़ी गिलहरी ,सांभर ,चीतल ,बायसनका अवलोकन किया। तत्पश्चात विद्यार्थियों ने कांगेर घाटी नेशनल पार्क में स्थित एशिया की सबसे बड़ी लाइमस्टोन से बनी कुटुमसर गुफा जो लगभग 4500 मीटर लंबी और फीट 120–45 ,गहरीसमुद्र तल से 560 मीटर ऊंची है का अवलोकन भी किया। जहां उन्होंने स्टेलेगमाइट्स, स्टेलेक्टाइट से निर्मित विभिन्न कलाकृतियों के बारे में जाना और समझा साथ ही किए उसके अंदर के पानी में मिलने वाली अंधे मछलियों का भी अध्ययन किया। तत्पश्चात छात्रों ने बारसूर के ट्राइबल हाट में पारंपरिक पकवान एम व्यंजनों का भी स्वाद भी लिया भ्रमण के दौरान बच्चो ने वह की मछ।लियों के पारंपरिक संरक्षण को भी जाना ओर और समझा ।साथ ही विद्यार्थियों ने अन्य पर्यटन स्थल जैसे बारसूर के सात धार जलप्रपात,मामा, भांजा मंदिर– तीरथगढ़, चित्रकूट जलप्रपात, अंथोपोलॉजिकल म्यूजियम जगदलपुर का भी अवलोकन किया उपर्युक्त भ्रमण के दौरान विभाग । के 40विद्यार्थियों सहित अतिथि व्यख्याता श्री महेश कुमार लाडेकर समेत अन्य भी सम्मिलित रहे।

बस्तर : कोतुम्सर गुफा

108
KANGER VALLEY NATIONAL PARK
Jagdalpur
MARUTI
realme Shot by cheman, Satish sahu
2023/03/18 11:30

श्री श्री 1008 माँ दन्तेश्वरी माई जी
कलेक्टर
शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
प्राणीशास्त्र विभाग
शैक्षणिक भ्रमण
realme Shot by cheman, Satish sahu
2023.03.19 08:31

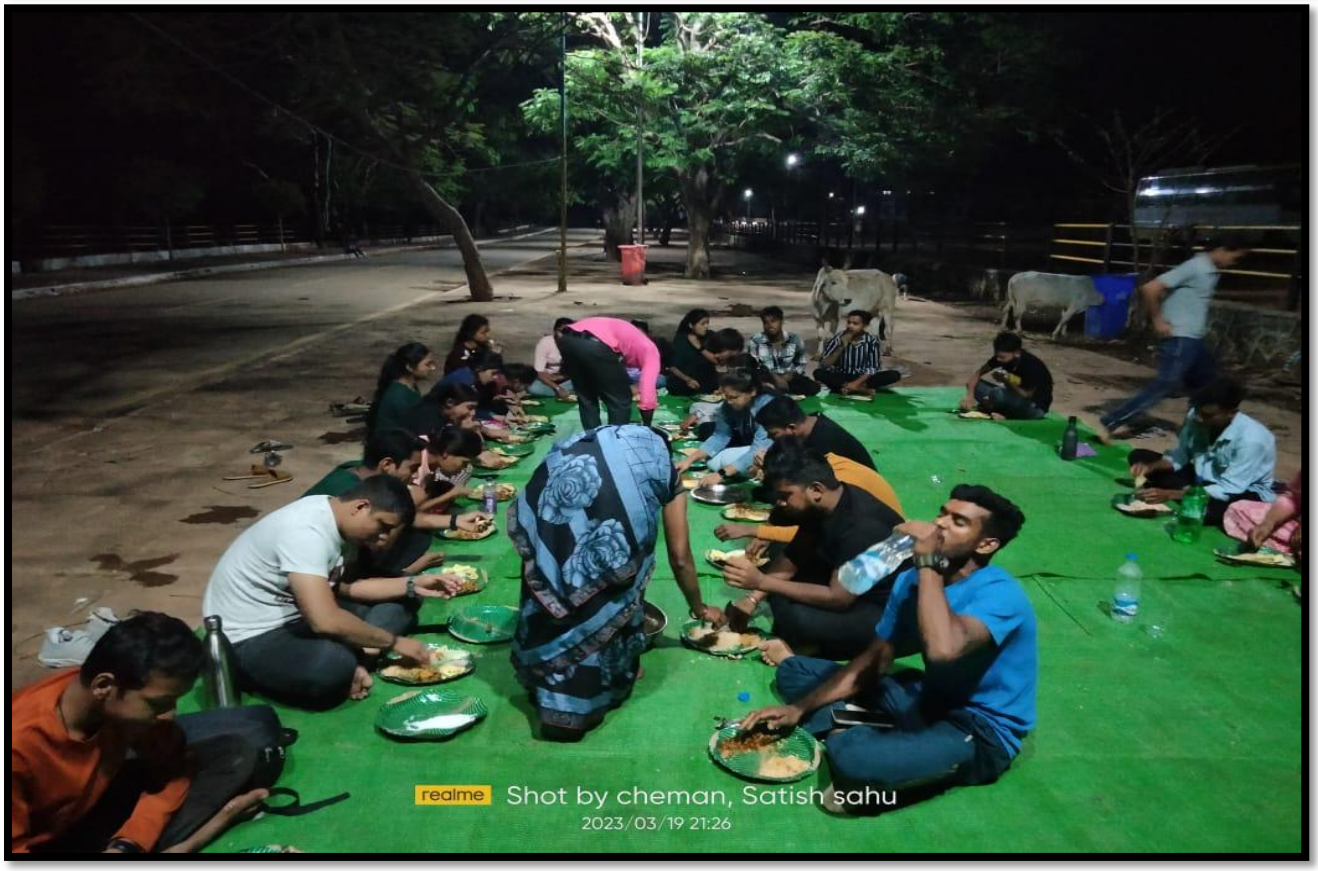
realme Shot by cheman, Satish sahu
2023/03/19 21:26

# विद्यार्थियों ने किया शैक्षणिक भ्रमण

राजनांदगांव। दिग्विजय कॉलेज राजनांदगांव के प्राचार्य डॉ. केएल टांडेकर के मार्गदर्शन और विभागाध्यक्ष डॉ. किरणलता दामले के नेतृत्व में शा. दिग्विजय कॉलेज के प्राणिशास्त्र विभाग के स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों ने बस्तर के प्रमुख पर्यटन स्थलों का शैक्षणिक भ्रमण किया।

जगदलपुर से 40 किलोमीटर दूर स्थित कांगेर घाटी नेशनल पार्क भ्रमण के दौरान संरक्षित वन, वहां मिलने वाले विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों की प्रजातियां, औषधीय पौधे एवं जीव-जंतु जैसे बायसन, चीतल, सांभर, भारतीय बड़ी गिलहरी, उड़न गिलहरी आदि का अवलोकन किया। तत्पश्चात विद्यार्थियों ने कांगेर घाटी नेशनल पार्क में स्थित एशिया की सबसे बड़ी लाइमस्टोन से बनी कुटुमसर गुफा जो लगभग 4500 मीटर लंबी और 45-120 फीट गहरी, समुद्र तल से 560 मीटर ऊंची का अवलोकन भी किया, जहां उन्होंने स्टेलेगमाइट्स, स्टेलेक्टाइट से निर्मित विभिन्न कलाकृतियों के बारे में जाना और समझा। साथ ही उसके अंदर के पानी में मिलने वाली अंधे मछलियों का भी अध्ययन किया। छात्रों ने बारसूर के ट्राइबल हाट में पारंपरिक पकवान एवं व्यंजनों का भी स्वाद भी लिया।

भ्रमण के दौरान बच्चों ने वहां की मछलियों के पारंपरिक संरक्षण को भी जाना और समझा। साथ ही विद्यार्थियों ने अन्य पर्यटन स्थल जैसे बारसूर के सात धार जलप्रपात, मामा-भांजा मंदिर, तीरथगढ़, चित्रकूट जलप्रपात, अंथोपोलॉजिकल म्यूजियम जगदलपुर का भी अवलोकन किया। उक्त भ्रमण के दौरान विभाग के 40 विद्यार्थियों सहित अतिथि व्याख्याता महेश कुमार लाडेकर समेत अन्य भी शामिल रहे।

सिन्हा, तरूण वैष्णव सहित छात्रनेता मौजूद रहे.

# विद्यार्थियों ने भ्रमण किया कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान

राजनांदगांव. प्राचार्य डॉ. के. एल. टांडेकर के मार्गदेशन और विभागाध्यक्ष डॉ किरण लता दामले के नेतृत्व में शासकीय दिग्विज महाविद्यालय के प्राणिशास्त्र विभाग के स्नातकोत्तर के विद्यार्थियो ने 18 से 19 मार्च तक बस्तर के प्रमुख पर्यटन स्थलों का शैक्षणिक भ्रमण किया. जगदलपुर से 40 किलोमीटर दूर स्थित कांगेर घाटी नेशनल पार्क में संरक्षित वन, वहां मिलने वाले विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों की प्रजातियां, औषधीय पौधेएवं जीव जंतु जैसे बायसन, चीतल, सांभर, भारतीय बड़ी गिलहरी, उड़न गिलहरी आदि का अवलोकन किया. तत्पश्चात विद्यार्थियों ने कांगेर घाटी नेशनल पार्क में स्थित एशिया की सबसे बड़ी लाइमस्टोन से बनी कुटुमसर गुफा जो लगभग 4500 मीटर लंबी और 45-120 फीट गहरी, समुद्र तल से 560 मीटर ऊंची है का अवलोकन भी किया. जहां उन्होंने स्टेलेगमाइट्स, स्टेलेक्टाइट से निर्मित विभिन्न कलाकृतियों के बारे में जाना और समझा साथ ही किए उसके अंदर के पानी में मिलने वाली अंधे मछलियों का भी अध्ययन किया. भ्रमण के दौरान बच्चो ने वह की मछलियों के पारंपरिक संरक्षण को भी जाना ओर और समझा. विद्यार्थियों ने अन्य पर्यटन स्थल जैसे बारसूर के सात धार जलप्रपात, मामा-भांजा मंदिर, तीरथगढ़, चित्रकूट जलप्रपात, अंथोपोलॉजिकल म्यूजियम जगदलपुर का भी अवलोकन किया. उपर्युक्त भ्रमण के दौरान विभाग के 40 विद्यार्थियों, अतिथि व्यसख्याता महेश कुमार लाडेकर समेत अन्य भी सम्मिलित रहे.

# विद्यार्थियों ने भ्रमण किया कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान

**राजनांदगांव**, 8 अप्रैल (देशबन्धु)। प्राचार्य डॉ. के. एल. टांडेकर के मार्गदेशन और विभागाध्यक्ष डॉ किरण लता दामले के नेतृत्व में शासकीय दिग्विज महाविद्यालय के प्राणिशास्त्र विभाग के स्नातकोत्तर के विद्यार्थियो ने दिनांक 18-03-23 से 19-03-23 तक बस्तर के प्रमुख पर्यटन स्थलों का शैक्षणिक भ्रमण किया। जगदलपुर से 40 किलोमीटर दूर स्थित कांगेर घाटी नेशनल पार्क का भ्रमण किया, भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने कांगेर घाटी नेशनल पार्क में संरक्षित वन , वहा मिलने वाले विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों की प्रजातियां, औषधीय पौधेएवं जीव जंतु जैसे - बायसन, चीतल, सांभर, भारतीय बड़ी गिलहरी, उड़न गिलहरी आदि का अवलोकन किया। तत्पश्चात विद्यार्थियों ने कांगेर घाटी नेशनल पार्क में स्थित एशिया की सबसे बड़ी लाइमस्टोन से बनी कुटुमसर गुफा जो लगभग 4500 मीटर लंबी और 45-120 फीट गहरी,समुद्र तल से 560 मीटर ऊंची है का अवलोकन भी किया। जहां उन्होंने स्टेलेगमाइट्स, स्टेलेक्टाइट से निर्मित विभिन्न कलाकृतियों के बारे में जाना और समझा साथ ही किए उसके अंदर के पानी में मिलने वाली अंधे मछलियों का भी अध्ययन किया। तत्पश्चात छात्रों ने बारसूर के ट्राइबल हाट में पारंपरिक पकवान एम व्यंजनों का भी स्वाद भी लिया। भ्रमण के दौरान बच्चो ने वह की मछलियों के पारंपरिक संरक्षण को भी जाना ओर और समझा। साथ ही विद्यार्थियों ने अन्य पर्यटन स्थल जैसे बारसूर के सात धार जलप्रपात,मामा-भांजा मंदिर, तीरथगढ़, चित्रकूट जलप्रपात, अंथोपोलॉजिकल म्यूजियम जगदलपुर का भी अवलोकन किया । उपर्युक्त भ्रमण के दौरान विभाग के 40 विद्यार्थियों सहित अतिथि व्यख्याता श्री महेश कुमार लाडेकर समेत अन्य भी सम्मिलित रहे।

- **<u>विज्ञान दिवस में विभाग की उपलब्धियां:</u>**

महाविद्यालय में डा . रामानुजन की स्मृति में विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें विज्ञान से जुडी कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। इन प्रतियोगिताओं में विज्ञान संकाय के स्नताकोत्तर कक्षाओं के समस्त छात्र छात्राएं भाग लेते है। विज्ञान दिवस में विभाग के छात्र थान सिंह वर्मा ने पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम एवं अंर्तविभागिय सेमिनार प्रतियोगिता में द्वितिय व तात्कालिक भा षण प्रतियोगिता में तृतिय स्थान प्राप्त किया।

- **<u>विस्तार गतिविधियां एवं सामाजिक दायित्व:</u>**

विभाग के छात्र थान सिंह के द्वारा पक्षी संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृ षट कार्य किया गया। जो विभाग के प्रत्येक छात्र के लिये प्रे रणा स्त्रोत बना। इस महत्वपूर्ण वि षय को घ्यान में रखते हुये विभागिय प्राध्यापको और एम .एस.सी प्राणीशास्त्र के छात्रों के द्वारा दिनांक 27 से 28 मार्च 2022 तक दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया , जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य डा . के.एल.टांडेकर उपस्थित थे। इस कार्यशाला में छात्रों ने पुरानी उपयोग में न आने वाले वस्तुएं जैसे नारियल का बुच, पुराने पुठ्ठे, पुराने बोरे एवं बांस की खपचियों से छोटी पक्षी गौरेया के लिये घोंसला बनाना सिखा। और इन घोंसलों को महाविद्यालय के विभिन्न स्थानों पर लगाया। छात्र इन घोंसलों को अपने गांवों में भी लगा रहे है और ग्रामीणें को पक्षी संरक्षण के प्रति जागरूक भी कर रहे है।

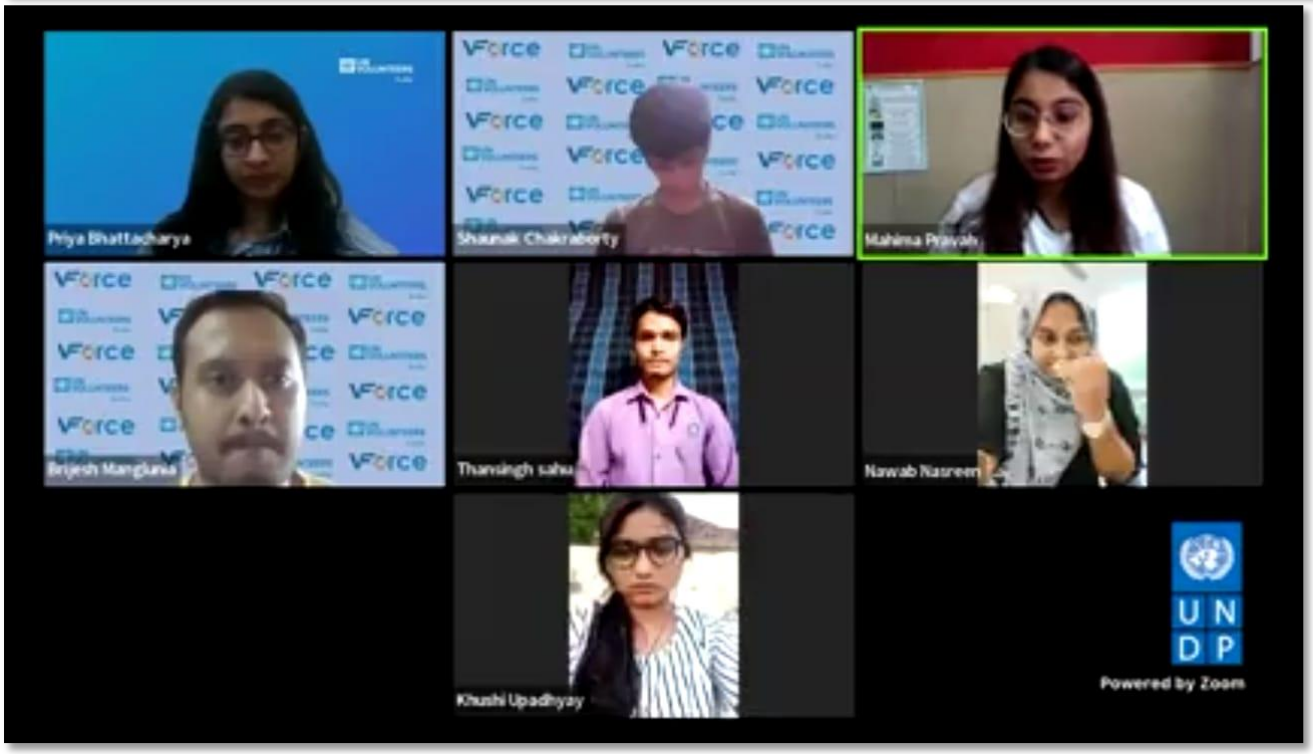


- <u>अंर्तविभागिय अतिथि व्याख्यानः</u>

विभाग में विषय संबधित स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के छात्र छात्राओं के लिए दिनांक **10 से 19 नवम्बर 2022** तक कुल 12 अंर्तविभागिय अतिथि व्याख्यान आयोजित किये गये। इसी क्रम में 04 विभागिय प्राध्यापकों ने अन्य विभागों में जाकर अतिथि व्याख्यान प्रस्तुत किये।

**श्री विकास कांडे – रसायन शास्त्र विभाग**

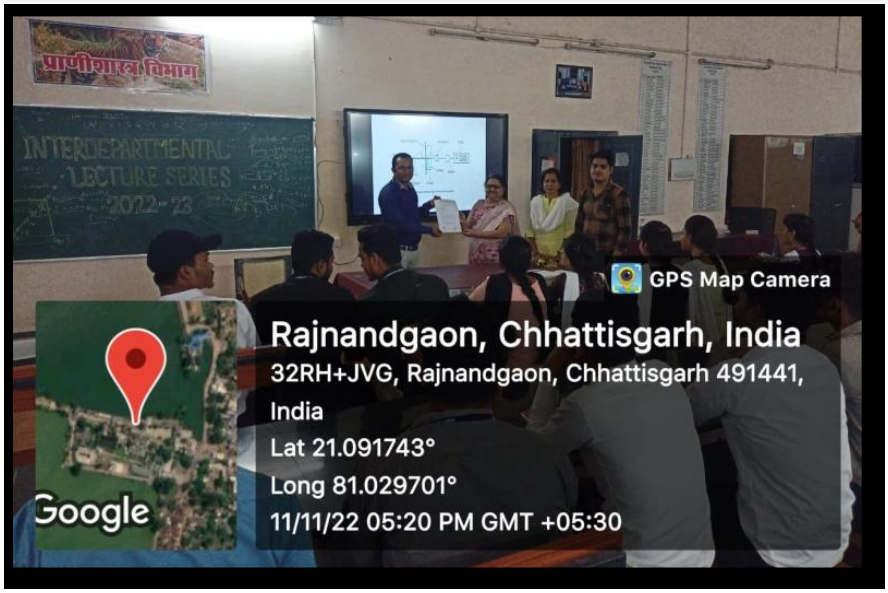


**श्री गोकुल निषाद– रसायन शास्त्र विभाग**

डॉ. के.के. देवांगन – गणित विभाग

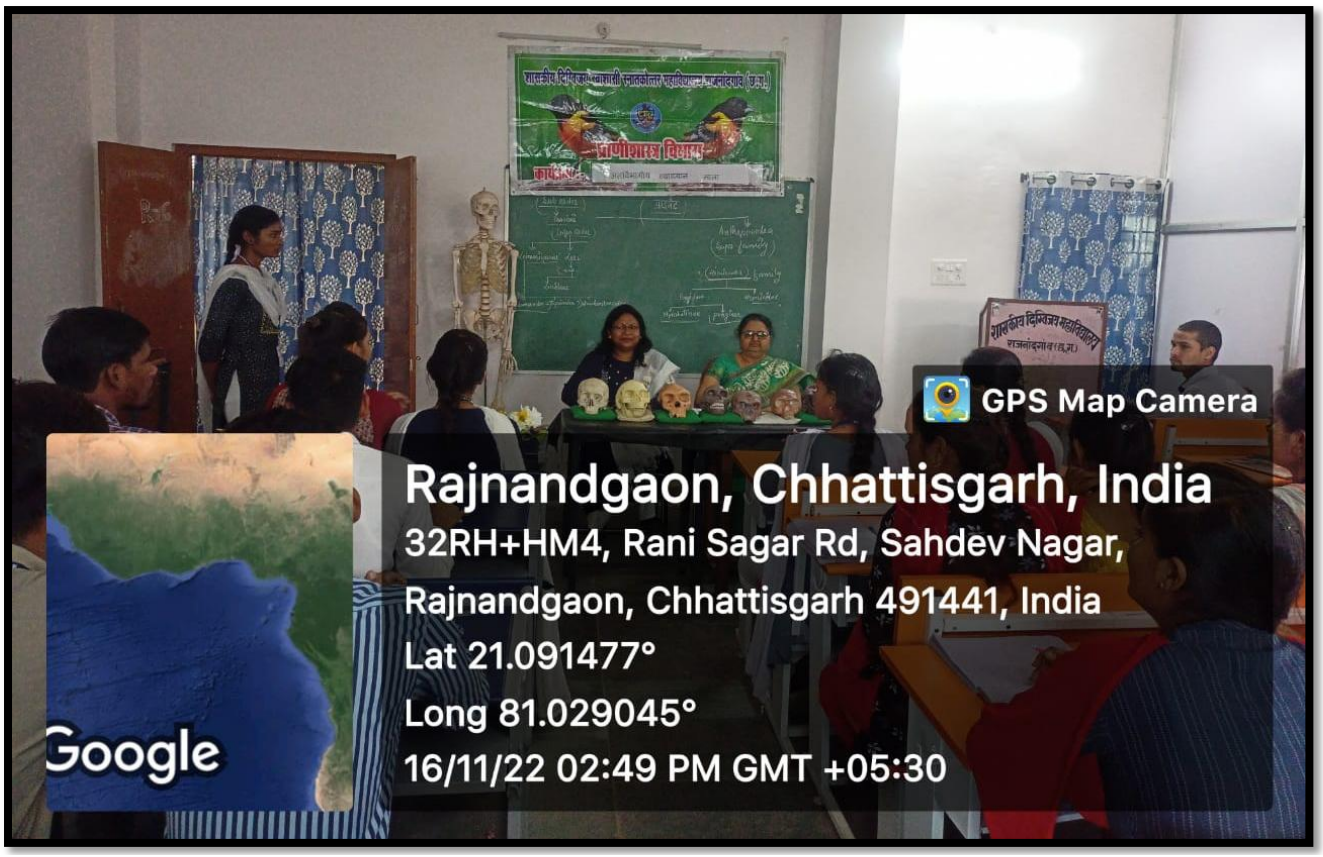

डॉ. अंजली मोहन कोडोपी – मानव विज्ञान

**श्रीमती कविता साकुरे – गणित विभाग**

**सवश्रेष्ठ प्रणलियां <u>वाल मैग्जीन:</u>**

वाल मैग्जिन का प्रकाशन केवल पी .जी. कक्षा के विद्यार्थियों के द्वारा किया जाता है . जिसके अंतर्गत छात्र छात्राएं प्रतिदिन समाचार पत्रों में छपी प्राणी यों एवं जिव विज्ञान से सबंधित विभिन्न रोचक खबरों की पेपर कंटिग्स को सूचना पटल पर प्रर्दर्षित किया जाता है, जिससे विभाग में आने वाले विद्यार्थी इसका अवलोकन कर सकें . तत्पश्चात इसे मैग्जीन में चस्पा कर **वाल मैग्जीन** बनाया जाता है। जिसका फायदा न केवल एम .एस.सी के छात्रों को मिलता बल्की बी.एस.सी. के छात्र जो प्रायोगिक कार्य करने विभाग में आते है वे इन खबरों को देखते है और उनके ज्ञान में वृद्धि होती है।

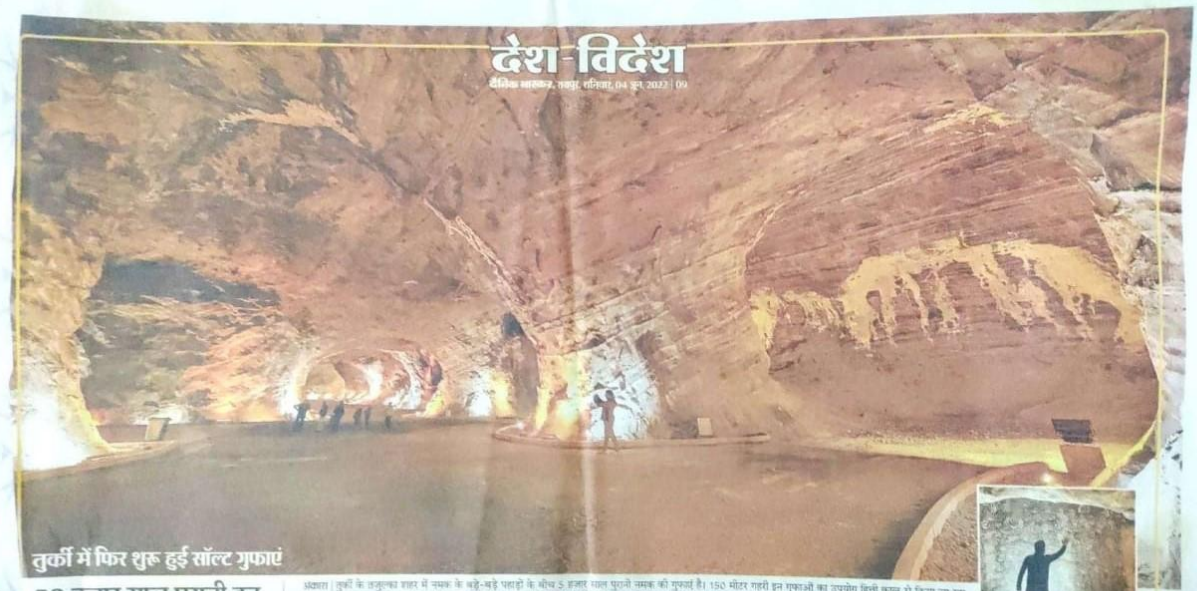

# देश-विदेश

दैनिक भास्कर, रायपुर, शनिवार, 04 जून, 2022 | 09



तुर्की में फिर शुरू हुई सॉल्ट गुफाएं

## 50 हजार साल पुरानी इन गुफाओं में होती है हीलिंग

अंकारा | तुर्की के तजुल्का शहर में नमक के बड़े-बड़े पहाड़ों के बीच 5 हजार साल पुरानी नमक की गुफाएं है। 150 मीटर गहरी इन गुफाओं का उपयोग हित्ती काल से किया जा रहा है। कोरोना संक्रमण के चलते पिछले 2 साल से यहां आवाजाही बंद थी, जिसे दोबारा शुरू किया गया है। गुफाओं के 24 हजार वर्ग मीटर के आंतरिक और बाहरी क्षेत्र को स्वास्थ्य केंद्र के रूप में विकसित किया गया है। यह गुफाएं अस्थमा, ब्रोंकाइटिस और फेफड़ों के रोगों के इलाज के लिए अच्छी मानी जाती है इसलिए अन्य देशों के लोग भी इन बीमारियों का उपचार कराने आते है। लोग यहां बने नमक कक्षों में 20-40 मिनट तक रहते है। हर सांस के साथ शरीर में प्रवेश करने वाला नमक बीमारियों को ठीक करता है।

---

Naushad Kuldeep 4-06-2022

**प्रेरणा**

### पर्यावरण की चिंता में खड़े किए 2 हजार [illegible]गद पेड़

# पहाड़ पर जानवर न रहे प्यासे दादाजी ने खोदे डाले 14 तालाब

दिनभर पहाड़ी पर पेड़ों और तालाबों की देखभाल करते हैं बुजुर्ग

एजेंसी ›› बेंगलुरु

कर्नाटक के मांड्या निवासी केरे कामेगौड़ा ने ऐसा काम करके दिखाया है, जो सबके लिए उदाहरण बन गया है। दरअसल, 82 वर्षीय कामेगौड़ा ने अपने हाथों से कुल 14 छोटे तालाब बना डाले। चामराज नगर जिले में स्थित मंदिरों में दर्शन करने जाने वाले लोग जब बेंगलुरु-महाकल्ली-कोल्लेगल रोड से गुजरते हैं तो रास्ते में उनको रास्ते में लोगों से कामेगौड़ा के बारे में सुनने को मिलता है।

- इनाम में मिली राशि का इस्तेमाल खुद के लिए न करके तालाब बनाने के लिए किया

कामेगौड़ा का घर दासनादोड्डी में है और आज भी उनका परिवार झोपड़ियों में ही रहता है। अक्सर कामेगौड़ा अपने घर की बजाय कुंदिनीबेट्टा गांव के आसपास भेड़ चराते और पर्यावरण की चिंता करते पाए जाते हैं। कामेगौड़ा जानवर चराने के दौरान या तो पेड़ लगाते हैं या फिर गड्ढे खोदते हैं।

**प्यासे जानवरों पर आया तरस :** 40 साल पहले यह काम शुरू करने वाले कामेगौड़ा बताते हैं, 'मैं पहाड़ियों पर जब जानवर चराने जाता था तो उनके लिए कहीं पर भी पानी नहीं मिलता था और जानवर प्यासे रह जाते थे। इसी के चलते ऊंचाई पर जानवर नहीं मिलते थे। यह देखकर मैंने गड्ढे बनाने शुरू कर दिए। जब तक जानवर चरते रहते मैं लकड़ी की मदद से गड्ढे खोदता था।' गौरतलब है कि कामेगौड़ा को पहली बार खुदाई करते समय कुछ फीट खोदने के बाद ही पानी मिल गया था।



### 82 साल के हैं पर एकदम फिट

कामेगौड़ा ने पढ़ाई नहीं की है लेकिन उन्होंने तालाबों का नाम पौराणिक [illegible] के नाम पर रखा है। वह बताते हैं कि उन्होंने पहले [illegible] का नाम गोकर्ण और [illegible] वाली सड़क का नाम राम और लक्ष्मण के नाम पर रखा है। 82 साल के हो [illegible] कामेगौड़ा आज भी पूरी तरह स्वस्थ हैं। वह रोज पहाड़ी पर चढ़ते हैं और उतरते हैं। वह बताते हैं, 'हाल ही में मेरी एक आंख का ऑपरेशन हुआ, इसमें मैसूर के एक सामाजिक कार्यकर्ता जयराम पाटिल ने मेरी मदद की। उन्होंने दूसरी आंख का इलाज कराने का वादा किया है।

### 40 साल का सफर, बनाए 14 तालाब

अब तक कुल 14 तालाब बना चुके कामेगौड़ा ने 2017 सिर्फ छह तालाब ही बनाए थे लेकिन पिछले एक साल में उनके काम में तेजी आई और आंकड़ा दोगुने से भी ज्यादा हो गया। एक स्थानीय निवासी कामेगौड़ा के बारे में बताते हैं, 'कामेगौड़ा को उनके काम के लिए कई सारे इनाम और पैसे भी मिले लेकिन उन्होंने पैसों का इस्तेमाल खुद के लिए न करके तालाब बनाने के लिए किया। उन्होंने इन पैसों से औजार खरीदे और मजदूर लगाकर तालाब बनवाए। उन्होंने पहाड़ी पर जानवरों के लिए एक रास्ता भी बनवाया। उनके बच्चे आज भी झोपड़ी में रहते हैं और जानवर चराते हैं।



### औजार खरीदने के लिए बेच दी थी भेड़

कामेगौड़ा आगे बताते हैं, 'शुरुआत में मैं लकड़ी से गड्ढे खोदता था, जोकि काफी कठिन काम था। मैंने कुछ औजार खरीदने का फैसला किया, इसके लिए मुझे कुछ भेड़ें बेचनी भी पड़ीं। पहले गड्ढे को झील में बदलने के बाद मुझे लगा कि इससे जानवरों को काफी मदद मिलती है। यह देखकर मैंने अपना काम जारी रखने का फैसला किया।'

### पहाड़ के लिए बनाई सड़क

इस प्रकार बिना पढ़े लिखे और बिना किसी तकनीकी कौशल के भी कामेगौड़ा ने पानी के बहाव और अन्य चीजों के बारे में अपनी समझ विकसित की और लोगों को भी अपने काम से प्रभावित किया। वह आगे कहते हैं, 'अभी तक मैं अकेले ही काम कर रहा था लेकिन पिछले साल मुझे किया सुदीप ने इनाम के रूप में कुछ पैसे दिए। उन पैसों से मैंने पहाड़ी के लिए एक सड़क बनाई। इससे सभी तालाबों को सही आकार देने में मदद मिली। साल 2018 में मैंने पहाड़ी पर 2,000 से ज्यादा बरगद के पेड़ लगाए हैं।

### पेड़ों और तालाब की करते हैं रखवाली

कामेगौड़ा के बेटे कृष्णा बताते हैं, 'पिताजी सिर्फ रात में घर आते हैं, दिनभर वह पहाड़ी पर अपने पेड़ों और तालाबों की देखभाल करते हैं। मैंने भी उनके काम को अपना बना लिया है। वह इनाम में मिलने वाले सारे पैसे इसी काम में लगाते हैं, परिवार को भी उन्होंने इनाम का एक पैसा नहीं दिया।' उनका इलाज कराने वाले जयराम पाटिल बताते हैं कि कामेगौड़ा अपनी कमाई के पैसे भी पेड़ों और तालाब के लिए खर्च कर देते हैं।

---

### साइकिल से प्राचार्य पहुंचे कॉलेज

राजनांदगांव। विश्व साइकिल दिवस पर 3 जून को शासकीय दिग्विजय कॉलेज के प्राचार्य डॉ. केएल टांडेकर ने साइकिल से महाविद्यालय पहुंचकर विद्यार्थियों एवं लोगों को पर्यावरण एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया। उन्होंने कहा कि साइकिल चलाना जहां पर्यावरण के अनुरूप है। वहीं इससे ईंधन की बचत होती है व रोग-प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। विश्व साइकिल दिवस हमें यह संदेश देता है कि हम जहां तक हो सके साइकिल का प्रयोग करें एवं स्वच्छ पर्यावरण में अपना सहयोग दें। प्राचार्य के साथ रजिस्ट्रार दीपक कुमार परगनिहा ने भी साइकिल से महाविद्यालय पहुंचकर पर्यावरण और स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने का संदेश दिया। इसके अतिरिक्त विश्व साइकिल दिवस पर महाविद्यालय के अन्य कर्मचारी शंकर ठाकुर, कामता प्रसाद, दुलेश कुंजाम साइकिल से महाविद्यालय पहुंचकर पर्यावरण और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का परिचय दिया।



---

**ऑफ बीट**

## बॉडी डियोड्रेंट देर तक सूंघने से युवती की मौत!

अगर आप डियोड्रेंट इस्तेमाल करते है तो आपको थोड़ा सचेत होने की जरूरत है। ऑस्ट्रेलिया में 16 साल की एक लड़की की मौत डियोड्रेंट सूंघने की वजह से हो गई। डॉक्टर भी मानते हैं कि इसकी खुशबू ज्यादा सूंघने होने से शरीर में ऑक्सीजन नहीं पहुंचता। रिपोर्ट के मुताबिक, ऑस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स में एनी नाम की महिला अपने परिवार के साथ रहती है। उनके परिवार में 16 साल की बेटी ब्रूक रयान भी थी। 3 फरवरी 2022 को एनी अपने काम से वापस थीं, जबकि बेटी तैयार हो रही थी। काफी देर तक जब उसकी कोई आवाज नहीं सुनाई दी तो वह उसके कमरे में गईं। अंदर जाने पर उन्होंने जो देखा उससे वह दंग रह गईं। दरअसल उनकी बेटी औंधे मुंह गिरी पड़ी थी। उसके बगल में डियोड्रेंट और एक टी-टॉवल पड़ा हुआ था। यूनिवर्सिटी ऑफ रोचेस्टर मेडिकल सेंटर की पिछले दिनों एक रिपोर्ट आई थी। इसकी मानें तो एयरोसोल स्प्रे या सॉल्वेंट में मौजूद केमिकल को अगर कोई बहुत देर तक सूंघता है तो उसे दिल का दौरा और दिल से जुड़ी कई अन्य दिक्कतें हो सकती है। इससे उस शख्स की जान भी जा सकती। दरअसल ज्यादा मात्रा में केमिकल इन्हेल करने के बाद सांस लेने पर भी बॉडी के अंदर ऑक्सीजन नहीं जाता है। इससे सफोकेशन होने लगती है और इंसान की मौत हो जाती है।



Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

**रिसर्च** • पहली बार मच्छरों के काटने के बारे में 3 साल तक निरंतर अध्ययन के नती…

# त्वचा में फैटी एसिड्स और माइक्रोबायोटा की गंध के कारण मच्छर आकर्षित होते हैं और ज्यादा काटते हैं

एजेंसी | वॉशिंगटन

कुछ लोगों को अक्सर यह शिकायत होती है कि उन्हें अन्य लोगों के मुकाबले ज्यादा मच्छर काटते हैं। इतना ही नहीं कई शोध में भी यह सामने आ चुका है कि मच्छरों से बचने की आप कितनी भी कोशिश करें लेकिन वे आपकी सांसों की गति, शारीरिक ऊर्जा और गंध को महसूस कर आप तक पहुंच जाते हैं।

इसके अलावा अलग-अलग धारणाएं हैं कि ब्लड ग्रुप, डायबिटीज या कुछ खास चीजें खाने से मच्छर ज्यादा काटते हैं, लेकिन अब तक कोई ठोस रिसर्च या डेटा नहीं था। ठोस जानकारी और पुख्ता सबूत हासिल करने के लिए पहली बार कोशाल और मारिया एलेना डी ओबाल्डिया ने एक अध्ययन किया। इसके नतीजे साइंटिफिक जर्नल सेल में प्रकाशित हुए। इसमें सामने आया कि लोगों की त्वचा पर अलग-अलग तरह के माइक्रोबायोटा (त्वचा के जीवाणुओं की गंध) होते हैं। जिससे मच्छर उनकी ओर आकर्षित होते हैं। इसके अलावा त्वचा पर मौजूद फैटी एसिड्स मच्छरों के लिए एक खास परफ्यूम बनाते है, इससे मच्छर … से ही खींचे चले आते हैं। कहा … सकता है कि ज्यादा फैटी एसिड… होने के कारण भी कुछ लोगों … मच्छर ज्यादा काटते हैं। 3 साल त… चले इस अध्ययन में कुछ लोगों … 6 घंटे हाथों में नॉयलोन की स्टो… पहनाकर यह अध्ययन किया गय… इन प्रतिभागियों में प्रयोग के दौरा… कुछ को सब्जेक्ट 33 और कु… को सब्जेक्ट 19 नाम में विभाजि… किया गया था। सब्जेक्ट 33 व… और सबसे ज्यादा मच्छर गए औ… सब्जेक्ट 19 की ओर सबसे कम… ऐसा त्वचा से होने वाली स्राव व… गंध के कारण हुआ।

## इंसानी त्वचा चुंबक की तरह होती हैं, मच्छर चिपक जाते हैं



डी. ओबाल्डिया कहती हैं कि अध्ययन के दौरान ऐसे लोग चिन्हित किए जिनकी त्वचा मच्छरों के लिए चुंबक की तरह काम कर रही थी। प्रयोग के दौरान लोगों के शरीर में निकलने वाले फैटी एसिड्स के गुण लगभग स्थिर ही रहे।

Sujeet - 8-06-2022

---

दैनिक भास्कर - 8 … 2022

**वेब भास्कर** डाइवर्स ने बचाई जान, बदले में व्हेल ने थैंक्यू कहा!

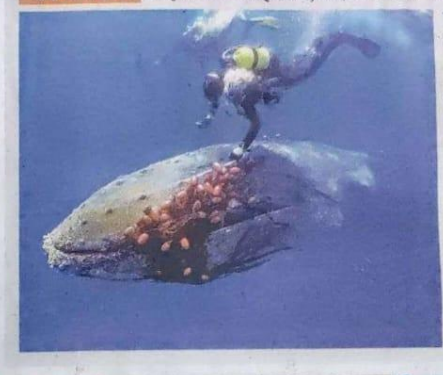



मनुष्यों ने लालच के चक्कर में कोई जगह नहीं छोड़ी है। ताजा उदाहरण स्पेन के मायोरका द्वीप का है। यहां गैरकानूनी तरीके से समुद्र के अंदर नेट बिछाई गई थी। इसमें यह 40 फुट की हम्पबैक व्हेल फंस गई। इसके बाद चार डाइवर्स की टीम इसके रेस्क्यू के लिए आई। इंसानी आहट से शुरुआत के 10 सेकंड तक व्हेल नर्वस रही, फिर सहज हुई। 45 मिनट की मशक्कत के बाद व्हेल आजाद हो गई। डाइवर्स के मुताबिक वापस समुद्र की गहराइयों में जाने से पहले हम्पबैक ने कृतज्ञता की मुद्रा में ऐसे इशारा किया, मानो थैंक्यू कह रही हो।

तस्वीर साभार : Reuters

---

**भास्कर खास** • मरीज को मर्ज का पता चलने तक 80% हार्मोंस रिलीज हो जाता है

# 65 साल से अधिक उम्र के बुजुर्गों को यदि बार-बार बुरे सपने आते हैं तो उन्हें पार्किंसन का खतरा ज्यादा

एजेंसी | लंदन

यदि 65 साल से अधिक उम्र के बुजुर्गों को लंबे समय से बुरे सपने आ रहे हैं तो वे पार्किंसंस रोग के शिकार हो सकते हैं। बर्मिंघम यूनिवर्सिटी के न्यूरोलॉजिस्ट अबिदेमी ओटाइकू ने हाल ही में एक स्टडी में यह खुलासा किया है। पूरी दुनिया में यह बीमारी 40 लाख लोगों को है यानी एक लाख में से 13 लोगों को होती है।

शोध में सामने आया कि जब तक इस बीमारी का पता लगता है, तब तक व्यक्ति अपने मस्तिष्क में 60 से 80% तक डोपामाइन-रिलीजिंग न्यूरॉन खो चुका होता है। लिहाजा इससे बचने के लिए 65 साल से अधिक उम्र के बुजुर्ग, खासकर पुरुषों को उनके सपनों के बारे में पूछकर या उनके शरीर के हिस्सों के मूवमेंट को देखकर पार्किंसंस के शुरूआती लक्षणों का पता लगाया जा सकता है। रिसर्च बताती है कि सपनों से यह बीमारी बढ़ने की संभावना 5 गुना बढ़ जाती है। हालांकि यह अच्छी बात है कि बुरे सपनों से पार्किंसंस जैसी बीमारी का पता चल जाता है, नहीं तो बीमारी की पुष्टि के लिए किए जाने वाले टेस्ट काफी महंगे होते हैं। पार्किंसंस के एक चौथाई रोगी बुरे सपनों के शिकार होते हैं। कुछ रोगी तो ऐसे भी हैं, जिन्हें 10 साल से बुरे सपने आ रहे हैं। पार्किंसंस से पीड़ित पुरुषों में महिलाओं की तुलना में अधिक परेशान करने वाले सपने होते हैं, महिलाओं को शुरूआती जीवन से ही बुरे सपनों के आने की संभावना पुरुषों के मुकाबले अधिक होती है। पुरुषों में बुरे सपनों की शुरुआत न्यूरोडीजेनेरेशन का भी संकेत होता है।

## बार-बार बुरे सपने आने से भी खतरा दोगुना बढ़ जाता है



12 साल तक की गई रिसर्च में 3818 बुजुर्ग पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य पर नजर रखी गई। बार-बार बुरे सपने आते हैं, उनमें इस बीमारी की संभावना 2 गुना बढ़ जाती है। रोग से पीड़ित लोग अपने हाथ, पैर और जबड़े में झटके महसूस करते हैं। मूवमेंट नहीं हो पाता।

दैनिक भास्कर - 09-जून 2022.

---

**पहली बार** • रायपुर के हीरापुर-जरवाय गौठान में लगाई गई गोबर से पेंट बनाने की मशीन

# गाय के गोबर से बन रहा पेंट और पुट्टी, 50 किलो गोबर से 100 लीटर पेंट, एक लीटर 230 रुपए में

**भास्कर एक्सक्लूसिव**

राकेश साहू | रायपुर

छत्तीसगढ़ में पहली बार रायपुर के हीरापुर-जरवाय गौठान में गाय के गोबर से पेंट और पुट्टी बनाई जा रही है। इसके लिए लगभग 25 लाख की लागत से 5 मशीनें लगाई गई हैं। इस पेंट और पुट्टी की डिमांड आने लगी है।

दैनिक भास्कर की टीम ने गोबर से पेंट और पुट्टी बनाने की प्रक्रिया को जानने की कोशिश की। मौका मुआयना करने पर वहां इंजीनियर आलोक साहू और स्व सहायता समूह की अध्यक्ष धनेश्वरी रात्रे मिलीं। इन्होंने बताया कि 2 दिन पुराने गाय के गोबर को पहले डी वाटर कर्लिंग मशीन में डाला जाता है। गोबर में पानी मिलाया जाता है। लगभग 2 घंटे में गोबर का घोल तैयार होता है। फिर से गोबर के घोल को डी वाटर कर्लिंग मशीन में डालकर पेंट तैयार करने के लिए वर्णक रंग, ऐक्रेलिक पाउडर, टाइटेनियम डाइऑक्साइड, सफेद रंग का बाइंडर, कैल्शियम हाइड्रॉक्साइड जैसे कई अन्य सामग्री मिलाई जाती है। फिर इन सबको हाई स्पीड डिसपेंसर मशीन में मिक्स किया जाता है। इसके बाद वाइट कलर में पेंट तैयार होता है। इसी तरह पुट्टी में होता है। पुट्टी को 2 से 3 तीन दिन सूखा कर पैकेजिंग की जाती है।

शेष | पेज 5

## पेंट 230 रुपए, डिस्टेंपर 130 रुपए लीटर मिल रही



मशीन में गोबर डालती महिला।

गोबर से बनी पेंट का अभी 230 रुपए लीटर तय किया है। इसके अलावा डिस्टेंपर का 130 रुपए तय किया है। पुट्टी और प्राइमर का दाम तय नहीं किए हैं। वहीं बाजार में बड़े कंपनियों के पेंट 400 रुपए लीटर से अधिक दामों में बिक रहे है, जिसको अब गोबर से तैयार पेंट कड़ी टक्कर दे सकते हैं।

## पेंट बनाने के लिए कुल 8 घंटे का प्रोसेस

जरवाय गौठान में लगी मशीन से 8 घंटे में एक हजार लीटर पेंट तैयार किया जा सकता है। यह क्वालिटी में ब्रांडेड कंपनियों के पेंट जैसा ही है। इसका मूल्य भी अन्य पेंट के मुकाबले कम रखा गया है। पेंट बनाने के लिए ज्यादा मात्रा में गोबर की आवश्यकता नहीं है। 50 किलो गोबर से 100 लीटर पेंट तैयार हो रहा है।

दैनिक भास्कर - 04 जून 2022

---

# देश-विदेश

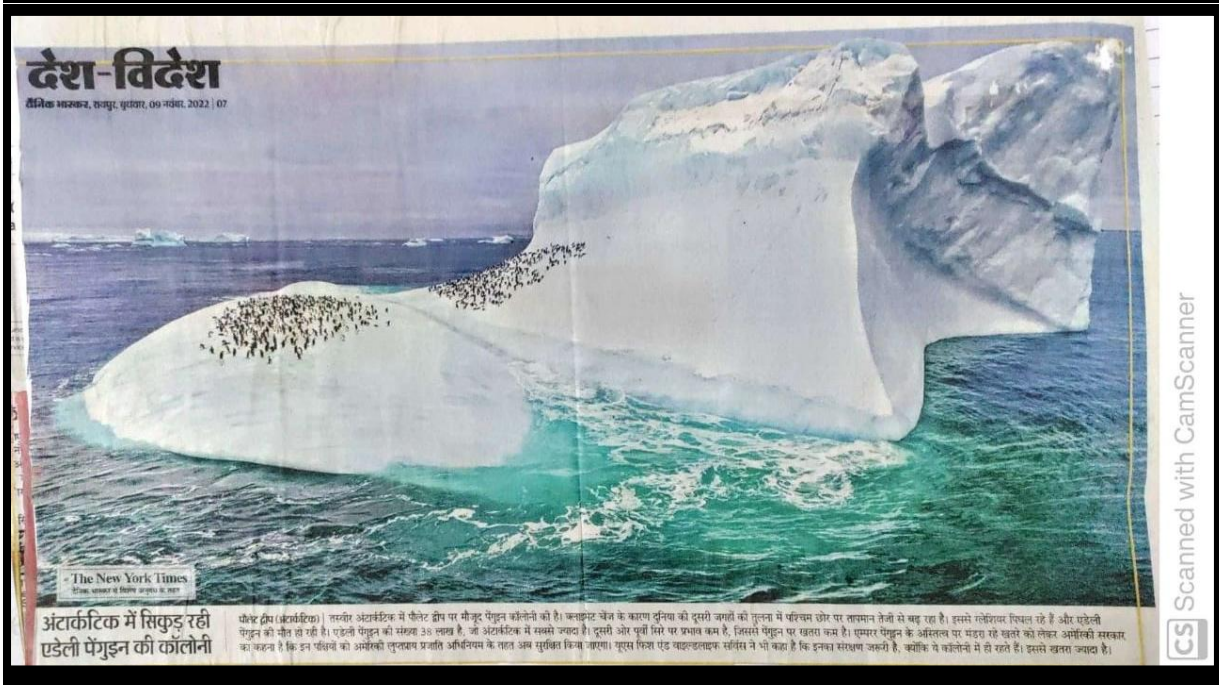

दैनिक भास्कर, रायपुर, बुधवार, 09 नवंबर, 2022 | 07





## अंटार्कटिक में सिकुड़ रही एडेली पेंगुइन की कॉलोनी

पौलेट द्वीप (अंटार्कटिका) | तस्वीर अंटार्कटिक में पौलेट द्वीप पर मौजूद पेंगुइन कॉलोनी की है। क्लाइमेट चेंज के कारण दुनिया की दूसरी जगहों की तुलना में पश्चिम छोर पर तापमान तेजी से बढ़ रहा है। इससे ग्लेशियर पिघल रहे हैं और एडेली पेंगुइन की मौत हो रही है। एडेली पेंगुइन की संख्या 38 लाख है, जो अंटार्कटिक में सबसे ज्यादा है। दूसरी ओर पूर्वी सिरे पर प्रभाव कम है, जिससे पेंगुइन पर खतरा कम है। एम्परर पेंगुइन के अस्तित्व पर मंडरा रहे खतरे को लेकर अमेरिकी सरकार का कहना है कि इन पक्षियों को अमेरिकी लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम के तहत अब सुरक्षित किया जाएगा। यूएस फिश एंड वाइल्डलाइफ सर्विस ने भी कहा है कि इनका संरक्षण जरूरी है, क्योंकि ये कॉलोनी में ही रहते हैं। इससे खतरा ज्यादा है।

CS Scanned with CamScanner

# डीएनए या परवरिश व्यक्तित्व में मनचाहा बदलाव लाने में बाधक नहीं, नियमित अभ्यास से यह संभव

एजेंसी | लंदन

दुनिया में दो-तिहाई लोग अपने व्यक्तित्व में किसी न किसी खामी से जूझ रहे होते हैं और बदलाव की इच्छा रखते हैं। दुनिया में कई मनोवैज्ञानिक अध्ययन में यह सामने आया है कि यदि आप अपने व्यक्तित्व में कोई गंभीर खामी से जूझ रहे हैं या उसे निखारना चाहते हैं तो यह संभव है। हो सकता है डीएनए या परवरिश से आपके व्यक्तित्व में कुछ अनचाहे पहलू आ गए हों लेकिन हमारे पास उनको बदलकर अपने भविष्य को गढ़ने की क्षमता है। मनोविज्ञान के प्रो. नाथन हडसन ने अपनी स्टडी से दिखाया है कि नियमित अभ्यास व्यक्तित्व में मनचाही खूबी ला सकता है और खामी को दूर कर सकता है। जैसे कि कम बोलने वाला लोगों से घुलने-मिलने वाला शख्स बनना चाहता है तो उसके लिए हफ्ते में एक बार अनजाने व्यक्ति से परिचय करने का लक्ष्य दिया जा सकता है। मनोवैज्ञानिक डेविड रॉबसन का कहना है मूल चरित्र को गढ़ने वाले पांच लक्षण हैं, जिन्हें बिग 5 कहा गया है, जैसे सामाजिक - आप समाज में किस तरह से मेलजोल रखते हैं, कर्तव्यनिष्ठ - कितने व्यवस्थित व अनुशासित हैं, सामंजस्य - सामाजिक सद्भाव से कैसा सरोकार रखते हैं, मानसिक रूप से कितने संवेदनशील हैं और अनुभव के लिए खुलापन - कितने कल्पनाशील हैं। मनोवैज्ञानिकों ने स्टडी के जरिये दिखाया है कि इन पांच क्षेत्रों में लोगों के स्कोर से उनके बारे में कितना सटीक अनुमान लगाया जा सकता है। अभ्यास के जरिए बदलाव लाया जा सकता है।

### दिमाग के लचीलेपन और जागरूकता से डिप्रेशन में कमी



अमेरिका में स्टोनी ब्रूक यूनिवर्सिटी के सायकोलॉजी की प्रो जेसिका श्लेडर ने एंग्जाइटी व डिप्रेशन पीड़ित100 बच्चों को दिमाग के लचीलेपन के विज्ञान के बारे में पढ़ाया। अनुभवों से रूबरू कराया। नौ महीने में उनमें एंग्जाइटी,डिप्रेशन का स्तर कम पाया गया।

Lipakshi Sahkathaliya 02/03/23

दैनिक भास्कर

## एक बतख और 76 बच्चे ! इस दुर्लभ फोटो से विशेषज्ञ भी चौंके

बतख के पीछे-पीछे चलती नन्हीं डक को आपने देखा ही होगा। लेकिन जब वयस्क बतख के पीछे एकसाथ 76 नन्हीं डक दिख जाएं, तो चौंकना स्वाभाविक है। कॉमन मर्गेंसर प्रजाति की इस बतख की कहानी जानने के लिए फोटोग्राफर ब्रेंट सिजेक ने पक्षी विशेषज्ञ केन काफमैन से बात की। उन्होंने बताया कि इन सारी डक की मां यह वयस्क बतख नहीं है। हो सकता है कि ये नन्हीं डक अपनी मां से बिछड़ गई हों। वयस्क बतख भी अपने बच्चे नहीं पहचान पातीं और मां से बिछड़ी डक भी एक जैसे दिखने के कारण भ्रमित हो जाती हैं। एक के पीछे एक चलने के कारण ये कारवां लंबा हो गया।

तस्वीर साभार: Brent Cizek



देश-विदेश

दैनिक भास्कर, रायपुर, गुरुवार, 27 जुलाई, 2023 | 7



समुद्र तट पर असामान्य घटना

## ऑस्ट्रेलियाः तट पर फंसीं 100 पायलट व्हेल, आधी की मौत

सिडनी | ऑस्ट्रेलिया के समुद्री तट पर बुधवार सुबह 52 पायलट व्हेल की मौत हो गई। ऑस्ट्रेलिया के पार्क एंड वाइल्डलाइफ सर्विस ने बताया कि देश के सुदूर पश्चिम में चेनेस बीच पर मंगलवार को करीब 100 पायलट व्हेल्स पहुंची थीं। यहां रातभर फंसे रहने के बाद 52 व्हेल्स की मौत हो गई। बाकी को गहरे पानी में भेजने के प्रयास किए जा रहे हैं। मंगलवार सुबह पायलट व्हेल्स का एक ग्रुप अल्बानी से 60 किलोमीटर पूर्व में चेनेस बीच के पास तैरता दिखा था। वैसे पायलट व्हेल समुद्री डॉल्फिन की एक प्रजाति है, जो समूह में सफर करती हैं। ये समुद्र तट पर अपने समूह के एक लीडर (पायलट) को फॉलो करती हैं। समूह में किसी साथी के घायल हो जाने पर उसके आसपास ही जुटी रहती हैं। समुद्रीय जीवन विशेषज्ञों के मुताबिक इनका अचानक तट पर पहुंचना असामान्य है। यह बीमारी फैलने का भी संकेत हो सकता है।



# 'Butterflies migrate with the rains, flying over mountains and against the winds'

***Krushnamegh Kunte** is Associate Professor at the National Centre for Biological Sciences (NCBS), Tata Institute of Fundamental Research. He tells **Times Evoke** about the huge monsoon journeys of butterflies:*



It can be mindboggling to think of species as small as butterflies migrating over vast distances and in tough physical conditions — yet, come the monsoon and butterfly groups in India's Western Ghats do so. There are two distinct reasons why. One is a seasonal movement, fuelled by the monsoon. For a long time, this has been quite constant and fairly fierce, particularly in coastal areas. In the Western Ghats, butterflies are pushed out of the hills where it rains very heavily. They can't survive in such downpours, so they move east towards the plains, first to Mysore in the north, then further on to Krishnagiri and other locations which are relatively dryer even during the monsoon.

They migrate to escape torrential rain and because this happens on a fairly regular basis, their movements are regular too, with their journey's starting point and end destinations remaining quite similar across the years. The other kind of migration — this process is also termed 'dispersal' — happens because during the early monsoon, when the rains are light, many butterflies breed. They produce a large brood and the new larvae eat up all the larval host plants around. Then, as adults, they find they have no place to lay eggs. So, they need to move to another area where they can do so — this is a resource-based dispersal.

Butterflies can undertake such migration both in small numbers or in dispersals involving millions of them. Migration of the first kind, due to poor weather conditions, happens in large forms. The other strategy butterflies often use to deal with poor weather is to enter diapause which is a dormant state in which as pupae or caterpillars, they might remain frozen in development until clement weather returns. This is seen across the Himalayas, Europe and other cold places. It isn't common in the rainy wet areas of South India though where hibernation isn't required as the challenging weather conditions last for just about two months and undertaking brief movement is more favourable.

So, these small species embark on this vast migration, flying over high mountains, against the winds and across hostile habitat conditions to get to a place where they can either stay dormant — a state when they are not courting or breeding but fly around and feed — or go back and forth between the two locations, breeding in either place in alternative generations. This is what crows and tigers, the milkweed butterflies of the Western Ghats, do. Emigrant butterflies from dry areas embark on the earlier dispersal strategy, where they fly to a new area in order to access plants.



TO RICHER PASTURES: The delicate lemon emigrant travels to access new plants

Photos: iStock



MONSOON JOURNEYING: The blue tiger butterfly undertakes a vast expedition

### WINGING IT

Formed under these two sets of conditions, these strategies are completely different — in the first one, there are steady movements across locations A and B because of weather conditions which are regular annual events. Here, butterflies migrate without being in a productive state. But butterflies which disperse due to resource conditions typically move with fully developed or developing eggs which are ready to be laid as soon as they find a new spot. Their flight morphology is therefore completely different from butterflies which fly in reproductive diapause — the latter's investment in flight muscles is very different. Both males and females here invest in a large thorax which fuels flight and not so much in reproductive tissue, unlike the other group which has well-developed reproductive tissue.

These contrasting migration and dispersal habits are shaped by different environmental conditions, annual predictability in these, resources in the locations butterflies can go to and whether they can breed there. So far, there has been a seasonal rhythm to such butterfly journeys. The impacts of climate change on such migration have not been documented yet — however, it is quite likely there will be effects caused by the growing unpredictability of weather events, the uncertainty around when exactly the monsoon will start and how much rain this will now bring. It is very probable that these conditions will affect butterfly migration and dispersal. Human activity overall is changing life for butterflies — the monarch in North America faces extensive habitat destruction, shrinking its population significantly. Whether climate change will add to that and alter the extraordinary expeditions undertaken by butterflies in India's monsoon must be studied.

ANYTHING BUT COMMON: The common Indian crow butterfly is quite an aviator

## READERS WRITE

Dear Times Evoke,

TE's articles are eye-openers. The veil of growth on our eyes doesn't let us see how our activities are causing habitat destruction. Benton Taylor's insights on plants (2nd July) were very important. We must see Earth as a living entity.

— **Dikshita Jasrotia,** Delhi

I loved the beautiful article on Benton Taylor's research! Times Evoke takes a special place in my week's routine. All its articles are informative and heartening. It gives great knowledge about topics which don't appear in our daily sources of news. Congratulations, TE!

— **Neelamuthu T,** Bengaluru

TE outlining how plants devise ways to survive in climate change was amazing! I'm a teacher and we want children to be aware, so they can develop ways to mitigate environmental threats. TE helps marvellously!

— **Rosalynn Routray,** via email

I was thoroughly engrossed reading Benton Taylor! It's a matter of joy that a section like TE thrives in this era, focused entirely on nature, science and building public insights about the environment. TE's articles are informational, aesthetic and awakening. Thanks, TOI!

— **Debarati Mukherjee,** North 24 Parganas, West Bengal

Thanks for the excellent knowledge on plants and terrestrial ecosystems through Benton Taylor! It is such a pleasure reading about so many interesting aspects in nature in TE every week. TE's scientific information is very helpful for me being a Class 12 student and it also helps me significantly during debates in my school.

— **Sachin Singh,** Varanasi

Share your thoughts at: timesevoke@timesgroup.com
You can also read Times Evoke online at: www.timesofindia.indiatimes.com/india/times-evoke

Page No.: 10
Date:

# Orange bats spotted

(1) 02/03/23 Thursday



Orange bat scientifically named as Carivola Picta. .

**Our Correspondent**
BIJAPUR, Jan 17

BRIGHT orange coloured bats have been spotted in Kanger Valley National Park which is known for its wide biodiversity and many rare animals and birds can be spotted here. Among them, bright orange coloured bats have also been seen recently.

The scientific name of this bat is Carivola Picta. It is commonly seen in Bangladesh, Brunei, Burma, Cambodia, China, India, Indonesia, Malaysia, Nepal, Sri Lanka, Thailand and Vietnam. So far in India it has been seen in

(Contd on page 3)

CS Scanned with CamScanner

अंतरिक्ष में पहेली | पृथ्वी से 37 प्रकाश वर्ष दूर, बौने लाल सितारे की परिक्रमा

## वैज्ञानिकों ने खोजा नया ग्रह, हर 11 दिन बाद नया साल

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

'सुपर अर्थ' लाल सितारे से 50 लाख किमी दूर

टोक्यो. नासा के वैज्ञानिकों ने जापान के सुबारू टेलीस्कोप के जरिए पृथ्वी जैसा एक ग्रह खोजा है। यह पृथ्वी से 37 प्रकाश वर्ष दूर एक बौने लाल सितारे के पास है। 'रॉस 508 बी' नाम का यह ठोस ग्रह पृथ्वी से चार गुना बड़ा है। इसलिए वैज्ञानिक इसे 'सुपर अर्थ' बता रहे हैं।

दिलचस्प बात यह है कि इस ग्रह पर हर 11वें दिन नया साल शुरू होता है। ग्रह जिस बौने सितारे के चारों और घूम रहा है, उसकी कक्षा बहुत छोटी है। पृथ्वी के 11 दिन में यह ग्रह उसका एक चक्कर पूरा करता है। रॉस 508 बी अपने सितारे से सिर्फ 50 लाख किलोमीटर की दूरी पर घूम रहा है। सौर मंडल में सूर्य का सबसे करीबी ग्रह बुध छह करोड़ किलोमीटर दूर है। अपने सितारे के करीब होने के कारण क्या यह ग्रह रहने लायक हो सकता है? इसके जवाब में वैज्ञानिक कहते हैं कि रॉस अंडाकार परिधि में घूमता है। यानी यह हमेशा अपने तारे के करीब नहीं होता। इसकी दूरी बदलती रहती है।

### पानी या जीवन के साक्ष्य नहीं मिले

वैज्ञानिकों का मानना है कि इस तरह का ग्रह अपनी सतह पर पानी बनाए रखने में सक्षम हो सकता है। हालांकि फिलहाल इस पर पानी या जीवन के साक्ष्य नहीं मिले हैं। बौने लाल सितारे अन्य तारों की तुलना में ठंडे होते हैं और काफी हल्के प्रकाश का उत्सर्जन करते हैं। इससे उनका अध्ययन चुनौतीपूर्ण है। हमारी आकाशगंगा में तीन-चौथाई तारे सूर्य से छोटे हैं।

Bharti Urvasha 6/10/22

---

पानिकल माइट का ...

## धान के खेतों में अदृश्य मकड़ी, एकड़ में दो से पांच क्विंटल तक फसल बर्बाद

भास्कर इंवेस्टिगेशन

प्रशांत गुप्ता/ देवेंद्र गोस्वामी | रायपुर

छत्तीसगढ़ में इस साल 57 लाख एकड़ में धान बोया गया है लेकिन किसान परेशान हैं, क्योंकि धान के खेतों पर एक अदृश्य 'मकड़ी' ने हमला बोल दिया है। इसका साइंटिफिक नेम पेनिकल माइट है, जो बालियों को इस तरह से शिकार बनती है कि किसानों को पता नहीं चलता और खड़ी-खड़ी फसल काली-भूरी हो रही है। कृषि वैज्ञानिकों का अनुमान है कि एक एकड़ में औसतन 25 क्विंटल धान पैदा हो रहा है, तो प्रभावित जिलों में मकड़ी 2 से 5 क्विंटल तक धान बर्बाद कर रही है। इस मकड़ी का सबसे ज्यादा प्रकोप धमतरी, महासमुंद, रायपुर, जांजगीर और गरियाबंद जिलों में है, हालांकि प्रदेश के बाकी जिलों में भी पेनिकल माइट से नुकसान हो रहा है। लगभग सभी जगह से कृषि केंद्रों ने इस प्रकोप की रिपोर्टिंग की है, लेकिन किसानों के लिए अब तक कोई एडवाइजरी जारी नहीं हुई है। भास्कर को कई जिलों के किसानों की परेशानी की जानकारी मिली। धमतरी, महासमुंद और रायपुर के किसानों से संपर्क किया। इनके खेतों तक पहुंचे। फसल को नजदीक से देखा तो पाया कि अब जब धान पकने का समय आ रहा है तो बालियों से धान गायब है। शेष | पेज 2

### धान का द्रव चूस लेती हैं, बाली में चावल नहीं बनता

Explainer
मकड़ी की पहली तस्वीर

आईजीकेवी के वरिष्ठ कीट वैज्ञानिक गजेंद्र चंद्राकर ने 50-एक्स ऑप्टिकल लैंस से ली पेनिकल माइट (मकड़ी) की तस्वीर।

भास्कर के सवाल, कीट विशेषज्ञ डॉ. शक्ति सिंह के जवाब

- **मकड़ी का हमला-** यह बेहद ही घातक कीट है। पेनिकल माइट गभोट (बटिंग स्टेज) में धान के दानों को पंचर करती है और रस चूसती है। पंचर वाले स्थान पर फफूंद का आक्रमण होने से बालियां बदरंग हो जाती हैं। जिससे दूध भराव नहीं होता और चावल बनने की प्रक्रिया पूरी नहीं होती है।
- **आक्रमण का समय-** धान 120-140 दिन में पकती है। बालियों पर कीटों का आक्रमण 60-70 दिनों में होता है। तभी कीटनाशक डालें।
- **कारगर कीटनाशक-** डाइफेन्थुरोन 50-एसपी, मात्रा- 120 ग्राम प्रति एकड़ पर। प्रोपिकोनाजोल 200 मि.ली. प्रति एकड़ फसल में।
- **क्या ये नहीं मरते?-** यह माइट 70-80 आर्द्रता और 28 से 35 डिग्री तापमान इसके लिए अनुकूल है। किसान 2 फसलें लेते हैं, अगर इसके प्रकोप से बचना है तो धान के बाद सब्जी या अन्य फसल लें। माइट फसल कटने के बाद ठूठ में भी, जमीन में जिंदा रहता है। कीटनाशक कारगर हैं।

लाइव • किसानों का दर्द

**सरल कुमार,** खोड़रा, धमतरी
मैंने 20 एकड़ में धान की फसल लगाई है, प्रति एकड़ माइट से 5 क्विंटल का नुकसान होगा। हालांकि इस साल कीटनाशक का छिड़काव जल्दी कर दिए थे।

**अनिल कश्यप,** महासमुंद
पिछले 5 दिनों से बालियां काली दिखाई दे रही हैं। बारिश से दवा का छिड़काव भी नहीं कर पाया हूं। जब कृषि विज्ञानियों से पूछा और दवा दिखाई तो बोले- यह नकली है।

एक्सपर्ट व्यू • डॉ. गजेंद्र चंद्राकर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईजीकेवी रायपुर

**कीटनाशकों के ज्यादा उपयोग का नतीजा**

धान की फसलों में कीटनाशकों के बेतहाशा इस्तेमाल से फसलों के कुदरती दुश्मन जैसे मकड़ियां, कीट, परजीवी, ततैया अधिक प्रभावी हो गए हैं। या कहें कि इनकी कीटनाशकों से लड़ने की क्षमता बढ़ गई है। बाजार में नकली कीटनाशक भी हैं। किसान एक्सपर्ट की सलाह के बाद इस्तेमाल करें।

इस कीट के बारे में जानकारी नहीं है। अधिकारियों और कृषि विशेषज्ञों से पूछता हूं। जो संभव कदम होंगे, उठाए जाएंगे।
-डॉ. अय्याज तंबोली, संचालक-कृषि

MSc 1st sem
Lokita Nandi

---

अद्भुत जीव

अजीबोगरीब दिखने वाली मकड़ी का नाम मैक्राकैंथा

## मकड़ी के सिर पर सींग, पेट के नीचे भाग में होती है रीढ़

Jitesh vaa... 13/10/22

धरती पर बेहद खूबसूरत जीव पाए जाते हैं। ये जीव अपनी खूबसूरती से लोगों का मन मोह लेते हैं। दुनिया में पाए जाने वाले जीवों की अपनी एक खासियत होती है।

नई दिल्ली। इन खूबसूरत दिखने वाले जीवों में कई बेहद जहरीले होते हैं जबकि कई बिल्कुल सामान्य होते हैं। धरती पर पाए जाने वाले कई जीवों को देखकर लगता है कि वह दूसरे ग्रह से आए हो। इन्हीं जीवों में मकड़ी भी शामिल है जिनमें कई बेहद जहरीली होती हैं। मकड़ियों की कई प्रजाति होती हैं जिनमें कई सामान्य होती हैं, तो वहीं कुछ बेहद खतरनाक और जहरीली होती हैं। एक मकड़ी ऐसी भी होती है, जिसके सींग होते हैं। यह सुनकर आपको यकीन नहीं हो रहा होगा। इस अजीबोगरीब दिखने वाली मकड़ी का नाम मैक्राकैंथा आर्कुआटा है। वह देखने में बेहद खतरनाक है और देखकर आप डर जाएंगे।

### भारत और चीन के जंगलों में

मैक्राकैंथा आर्कुआटा मकड़ी भारत और चीन के जंगलों में पाई जाती है। मैक्राकैंथा जीव की इस मकड़ी के ऊपर लाल, पीली, काली या सफेद रंग जैसे स्पाइक बनी होती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इन सींगों की वजह से इनको चिड़िया या छिपकलियां आसानी से नहीं खा सकती हैं।

### क्या कहते हैं एक्सपर्ट

वैज्ञानिकों का कहना है कि ये सींगों वाली मकड़ियों से इंसान को कोई खतरा नहीं रहता है। हालांकि इन सींग ऐसे दिखते हैं जिसे देखकर एक आम इंसान जरूर डर जाएगा।

### खतरनाक मकड़ी

सींग वाली मकड़ियां देखने में जरूर खतरनाक लगती हैं, लेकिन इंसान के लिए यह हानिकारक नहीं होती हैं। मैक्राकैंथा आर्कुआटा अपनी बनावट की वजह से खतरनाक दिखती है। इस मकड़ी में मादा और नर एक ही तरह दिखते हैं। इस मकड़ी की रीढ़ पेट के निचले भाग होती है।

### रीढ़ की 6 हड्डियां

इन मकड़ियों में मादा में रीढ़ ऊपर की तरफ होती है और रीढ़ की हड्डियां 6 होती हैं। इस मकड़ी की बीच रीढ़ हड्डी सींगों के तौर पर नजर आती हैं जो एक-दूसरे की तरफ हल्की झुकी होती हैं। मकड़ी के आकार से ये हड्डियां तीन गुनी बड़ी होती हैं और चार हड्डियां छोटी होती हैं। इन मकड़ियों की बड़े-बड़े सींग को देखकर लोग डर जाते हैं।

---

भास्कर खास • खाने से जुड़े अहसास को लेकर खुलासा

## खाने की महक दिमाग को सक्रिय कर देती है, इससे पुरानी घटनाएं भी तरोताजा हो जाती हैं

एजेंसी | वॉशिंगटन

### भूलने की बीमारी होने पर काम करती है यह सुगंध

अक्सर कहा जाता है कि खाने का संबंध स्वाद से होता है, लेकिन इसका संबंध हमारे सभी संवेदी अंगों से होता है। यही कारण है कि कई बार भोजन की सुगंध पाकर हमें स्वाद के अलावा इससे जुड़ी कुछ विशेष घटनाएं भी याद आ जाती हैं। इनका अहसास हमारे जेहन में लंबे समय तक बना रहता है, जबकि घटनाएं हमें याद नहीं रहतीं। इतना ही नहीं बुजुर्गों को अगर खाने की सुगंध आती है, तो इससे दिमाग सक्रिय हो जाता है। ये अतीत में पहुंच जाते हैं।

दरअसल, हाल ही में हुए खाने के अहसास से संबंधित शोध में यह खुलासा हुआ है। इस शोध के लिए शोधकर्ताओं ने खाने की सुगंध वाले छोटे-छोटे गोले बनाए। जब इन गोलों को प्रयोग में शामिल बुजुर्गों के पास ले गए, तो उनकी पुरानी यादें ताजा हो उठीं। इन यादों को लेनचेस्टर यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर कोरिना सास और डॉ. टॉम गेलर ने 3डी प्रिंटेड फ्लेवर-आधारित संकेतों की सहायता से रिकॉर्ड किया। शोध में 12 बुजुर्गों की 72 यादों में खाने को लेकर पुराना अहसास फिर सामने आया। इसके साथ ही उस दौर की घटनाएं भी सामने आईं।

शोधकर्ताओं का कहना है कि कुछ प्रतिभागियों में भूलने की बीमारी थी। जब उनके सामने खाने की महक पहुंची तो वे भी अपने जमाने के भोजन की तारीफ करते हुए घटनाओं को याद करने लगे। उन्होंने महसूस किया कि यह कुछ ऐसा है, जिसके बारे में उसे बहुत पहले से पता था।

Scanned with CamScanner